राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

@swatantraprabhatmedia | @swatantramedia | RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) | @SwatantraPrabhatonline | news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, गुरुवार , 27 नवंबर 2025

वर्ष 14, अंक 224, पृष्ट 04, मूल्य: 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

ओया गांव में 35 वर्षीय युवक को ट्यूबवेल पर बदमाशों ने पीट-पीटकर की हत्या..03

पीएम आवास योजना शहरी में मची लूट..04

बिहार में JDU को 'नंबर वन' बनाने का प्लान रेडी, नीतीश कैबिनेट की वैकेंसी बढ़ा रहा कांग्रेस-AIMIM की धड़कनें

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पटना- बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए को प्रचंड बहुमत मिल गया. नीतीश कुमार के नेतृत्व में फिर से एनडीए ने सरकार भी बना ली. कैबिनेट की पहली बैठक के फैसलों से यह बात साफ हो गई है कि चुनाव के दौरान एनडीए के नेताओं ने जो वादे किए, अब उन पर अमल होंगे. अगले 5 साल तक एनडीए को अपने वादे पूरे करने होंगे. बहरहाल, चुनावी सफलता के बाद अब एक और योजना पर एनडीए में जबरदस्त मंथन चल रहा है. अभी तक भाजपा पर आरोप लगते रहे हैं कि वह ऑपरेशन लोटस के जरिए विपक्ष को खत्म करने की योजना पर काम करती है. पर, इस बार यह काम एनडीए के प्रमुख घटक दल जेडीयू की ओर से हो सकता है. विपक्ष पर 'तीर' चलाने की आहट सुनाई पड़ने लगी है. इसकी जद में कौन-कौन दल आएंगे, यह अभी तक स्पष्ट नहीं हो पाया है, लेकिन माना जा रहा है कि जेडीयू के निशाने पर कांग्रेस और एआईएमआईएम के विधायक हैं।

कांग्रेस के 6 और AIMIM के 5 पर नजर

इस बार बिहार में कांग्रेस के 6 विधायक चुने गए हैं. असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी ऑल इंडिया मजलिस-ए-इत्तेहादुल मुस्लिमीन (AIMIM) के 5 विधायक निर्वाचित हुए हैं. पिछली बार भी AIMIM के 5 विधायक चुने गए थे, जिनमें अमौर क्षेत्र से निर्वाचित अख्तरुल ईमान को छोड़कर 4 को आरजेडी ने अपने पाले में कर लिया था. जिन विधायकों ने अपनी निष्ठा बदल कर आरजेडी ज्वाइन किया, उनमें बायसी से सैयद रुकनुद्दीन अहमद, जोकीहाट से शाहनवाज आलम, कोचाधामन से मोहम्मद इजहार असफी, बहादुरगंज से मोहम्मद अंजार नईमी शामिल थे. नीतीश कुमार के फिर से सीएम बनने के बाद AIMIM विधायकों के टूटने का खतरा अधिक है. इसलिए कि महागठबंधन की करारी हार के बाद ओवैसी के विधायकों के पास दूसरा कोई विकल्प नहीं बचा है. चुनाव में हार के बाद कांग्रेस में जिस तरह सिर फुटौवल शुरू हो गया है, उससे उसके 6 विधायकों पर भी पाला बदलने का खतरा मंडरा रहा है।

मंडिमंडल में जेडीयू ने 6 सीटें खाली रखीं

विपक्षी दलों में टूट की आशंका इसलिए अधिक है कि जेडीयू ने अपने कोटे के

मंत्रियों के 6 पद अभी खाली रखे हैं. बिहार में 36 मंत्री पद हैं. इनमें अभी तक सीएम समेत 27 मंत्रियों ने शपथ ली है. शपथ लेने वाले मंत्रियों में 2 उपमुख्यंत्री समेत भाजपा कोटे के 14 मंत्री हैं. जेडीयू कोटे से सिर्फ 8 मंत्रियों ने शपथ ली है. यानी भाजपा के बराबर संख्या को आधार मानें तो जेडीयू के कोटे से और 6 मंत्री बनाए जा सकते हैं।

ये पद जेडीयू ने क्यों खाली छोड़े हैं, इसमें ही विपक्ष में टूट के सूत्र छिपे नजर आ रहे हैं. पिछले चुनाव (2020) की 43 सीटों के मुकाबले इस बार जेडीयू के 85 विधायक चुने गए हैं. भाजपा 89 विधायकों के साथ अव्वल दर्जे की पार्टी बन गई है. नीतीश कुमार की कोशिश होगी कि किसी तरह अपने विधायकों की संख्या बढ़ाएं, ताकि जेडीयू को नंबर वन पार्टी बनाने का उनका सपना पूरा हो सके. नीतीश कुमार लंबे समय तक एनडीए में बड़े भाई रहे हैं. 2020 में यह सिलसिला रुक गया. चिराग पासवान के अलग चुनाव लड़ने से जेडीयू को 2020 में तकरीबन 3 दर्जन सीटों पर हार का सामना करना पड़ा था।

पहले भी कांग्रेस को तोड़ा है नीतीश ने

कांग्रेस के विधायक अगर टूटते हैं तो यह पहली बार नहीं होगा. इससे पहले भी कांग्रेस टूटती रही है. नीतीश कुमार 2017 में जब महागठबंधन से अलग होकर एनडीए में लौट आए थे, उसके साल भर बाद 2018 में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रहे अशोक चौधरी के साथ कांग्रेस के कई नेता जेडीयू में शामिल हो गए थे. अशोक चौधरी ने 1 मार्च 2018 को कांग्रेस छोड़कर जेडीयू की सदस्यता ग्रहण कर ली थी. उनके साथ कांग्रेस के 3 अन्य एमएलसी भी जेडीयू में शामिल हुए थे. जेडीयू में आने के कुछ समय बाद ही अशोक चौधरी को नीतीश ने कैबिनेट मंत्री बना दिया था. अशोक चौधरी के साथ जेडीयू ज्वाइन करने वालों में 3 अन्य एमएलसी थे- दिलीप कुमार चौधरी, तनवीर अख्तर और रामचंद्र भारती. अशोक चौधरी ने अन्य 3 एमएलसी के अलावा कांग्रेस के 13 दूसरे नेताओं को भी जेडीयू से जोड़ा था. इस तरह झटके में कांग्रेस के 17 नेता जेडीयू का हिस्सा बन गए थे।

संकट में कांग्रेस की सबसे बड़ी सरकार, सोनिया दरबार में पहुंचा मामला, क्या टूट जाएगा डीके शिवकुमार का सपना?

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

कांग्रेस पार्टी के लिए कर्नाटक में नेतृत्व का मसला नया सिरदर्द बन गया है. राज्य के सीएम सिद्दारमैया और उनके डिप्टी डीके शिवकुमार के बीच खींचतान अब किसी से छिपी नहीं है. दोनों नेता पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व को साधने में लगे हैं. इस बीच बेंगलुरु पहुंचे पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे से दोनों ने अलग-अलग मुलाकात की है. मंगलवार को डिप्टी सीएम डीके शिवकुमार, खरगे के साथ उनकी कार में मौजूद रहे तो दूसरी तरफ सीएम सिद्दारमैया उनके आवास पर जाकर उनसे मुलाकात की. सिद्दारमैया चाहते हैं कि केंद्रीय नेतृत्व कैबिनेट विस्तार को मंजूरी दे, वहीं शिवकुमार सीक्रेट डील का हवाला देकर पहले सीएम की कुर्सी चाहते हैं. सिद्दारमैया अपने साथ विधायकों के होने की दुहाई दे रहे हैं तो डीके सीक्रेट डील पर जोर दे रहे

हैं. इस बीच यह मसला दिल्ली दरबार भी पहुंच गया है. डेक्कन हेराल्ड की रिपोर्ट के मुताबिक मल्लिकार्जुन खरगे की रिपोर्ट के आधार पर सोनिया गांधी और राहुल गांधी इस मसले पर अंतिम फैसला लेंगे. रिपोर्ट में कहा गया है कि संसद के मानसून सत्र से पहले ये दोनों नेता एक साथ दिल्ली दरबार में तलब किए जा सकते हैं. इन दोनों नेताओं से सोनिया और राहुल गांधी एक साथ बात करेंगे. मीटिंग की यह तारीख 28 या 29 नवंबर हो सकती है. इस बीच डीके शिवकुमार कैंप के कुछ विधायक दिल्ली में डेरा डाले हुए हैं. वे पार्टी नेतृत्व पर डीके शिवकुमार को सीएम बनाने का दबाव बना रहे हैं. वे खुलेआम कह रहे हैं कि डीके ही सीएम बनेंगे।

पब्लिक में बयानबाजी

अब इस मसले पर खुद डिप्टी सीएम और सीएम खुलकर बोलने लगे हैं. मंगलवार को दोनों नेताओं ने बयानबाजी की. सिद्दारमैया ने कहा कि हाईकमान को जल्द से जल्द इस मसले को सुलझाना होगा. वहीं शिवकुमार ने कहा कि जो सीक्रेट डील हुई थी उसमें पार्टी के टॉप पांच-छह नेता शामिल थे और अब उन्हीं पांच-छह नेताओं को फैसला लेना है. इस बीच खरगे ने सार्वजनिक तौर पर इस संकट को लेकर कोई टिप्पणी नहीं की है. उन्होंने पिछले दिनों कहा था कि इसको लेकर पार्टी हाईकमान फैसला लेगा. पार्टी हाईकमान शब्द के इस्तेमाल पर उनकी खूब आलोचना हुई. मीडिया में यह सवाल उठा कि वह पार्टी के अध्यक्ष हैं तो फिर पार्टी में हाईकमान कौन हैं।

कांग्रेस की दुर्गति के लिए आलाकमान जिम्मेदार, सोनिया के भरोसेमंद राशिद अल्वी बोले, राहुल से मिलना तक मुश्किल

नई दिल्ली- कांग्रेस की लगातार गिरती राजनीतिक हालत पर अब पार्टी के ही वरिष्ठ चेहरे खुलकर सवाल उठाने लगे हैं. सोनिया गांधी के भरोसेमंद रहे और कांग्रेस के पूर्व प्रवक्ता राशिद अल्वी ने आलाकमान पर सीधा निशाना साधते हुए कहा है कि कांग्रेस की दुर्गति के लिए सबसे बड़ा जिम्मेदार खुद कांग्रेस हाईकमान है. अल्वी ने बुधवार को न्यूज़18 से बातचीत में कहा कि पार्टी नेतृत्व से मिलना तक बेहद मुश्किल हो गया है, खासकर राहुल गांधी तक पहुंच लगभग नामुमकिन. उन्होंने खुलासा किया कि पार्टी के भीतर संवाद की कमी इतनी गहरी हो चुकी है कि नेता अपनी समस्याएं या सुझाव तक शीर्ष नेतृत्व तक नहीं पहुंचा पा रहे. राशिद अल्वी ने कहा, 'आज कांग्रेस की हालत इसलिए खराब है क्योंकि हाईकमान से मिलना ही संभव नहीं. राहुल गांधी से मिलना भी आसान है. कांग्रेस नेता ने यह भी कह दिया कि अगर पार्टी को सुधारना है तो प्रियंका गांधी को कमान देनी चाहिए. अल्वी ने कहा, 'प्रियंका गांधी को संगठन की जिम्मेदारी संभालनी चाहिए. उनमें इंदिरा गांधी की छवि दिखती है.' इसके साथ ही उन्होंने पार्टी को यह सलाह भी दी कि संगठन को मजबूत करने के लिए बीजेपी से सीखने की जरूरत है।

हेमंत सोरेन की कुर्सी पर फिर मंडराने लगा खतरा, H C ने दिया बड़ा झटका

●BJP बोली-कोर्ट का सम्मान करें C M

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

रांची- झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की कुर्सी पर एक बार फिर कानूनी खतरा मंडराने लगा है। मंगलवार को झारखंड हाईकोर्ट ने प्रवर्तन निदेशालय (ED) द्वारा दायर एक मामले में रांची की सांसद/विधायक (MP/MLA) अदालत के समक्ष उनकी निजी उपस्थिति के आदेश पर लगी अपनी पिछली रोक को हटा दिया है. इस फैसले को मुख्यमंत्री के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है. मुख्यमंत्री सोरेन ने ईडी की शिकायत याचिका पर सांसद/विधायक अदालत द्वारा उन्हें व्यक्तिगत रूप से पेश होने का निर्देश दिए जाने के आदेश को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट में आपराधिक विविध याचिका दायर की थी।

ईडी ने दर्ज की थी शिकायत

यह मामला जमीन घोटाला से जुड़े मनी लॉन्ड्रिंग केस से संबंधित है। ईडी ने 2024 में विशेष सांसद/विधायक अदालत के समक्ष शिकायत याचिका दायर की थी. ईडी के रांची कार्यालय के निदेशक और शिकायतकर्ता देवराज झा ने अदालत को बताया था कि मुख्यमंत्री को एजेंसी के सामने पेश होने के लिए 10 समन भेजे गए थे, लेकिन सीएम ने केवल दो बार ही उपस्थिति दर्ज कराई और बाकी समनों को नजरअंदाज कर दिया. ईडी की शिकायत याचिका की

सुनवाई के दौरान, विशेष न्यायाधीश ने हेमंत सोरेन को व्यक्तिगत रूप से अदालत के सामने पेश होने का निर्देश दिया था। इसके बाद मुख्यमंत्री ने हाईकोर्ट का रुख किया था, जिसने दिसंबर 2024 में निचली अदालत के इस आदेश के क्रियान्वयन पर रोक लगा दी थी।

हाईकोर्ट ने दिया झटका

मंगलवार को हाईकोर्ट में सुनवाई के दौरान राज्य सरकार ने स्थगन की मांग की. हाईकोर्ट ने स्थगन की अनुमति देते हुए भी, अपने पहले दिए गए स्टे को हटा दिया. इस फैसले के बाद विपक्षी भाजपा हमलावर हो गई है। भाजपा ने मुख्यमंत्री से कोर्ट के फैसले का सम्मान करने और कानूनी प्रक्रिया का पालन करने की मांग की है. वहीं, झारखंड मुक्ति मोर्चा (JMM) के एक प्रवक्ता ने कहा, 'यह मामला विचाराधीन है और राज्य सरकार मामले की पैरवी कर रही है। इस समय कोई टिप्पणी करना सही नहीं होगा.' हाईकोर्ट के इस कदम से अब सांसद/विधायक अदालत में सीएम सोरेन की निजी उपस्थिति का रास्ता साफ हो गया है।

संक्षिप्त ख़बरें

केंद्र, राज्य सरकार संविधान के मूल मूल्यों पर ईमानदारी से अमल करें: मायावती

लखनऊ- बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने बुधवार को संविधान दिवस के अवसर पर भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार एवं बहुजन समाज के महानायक भारत रत्न बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर को नमन किया।

मायावती ने की ये अपील

मायावती ने सोशल मीडिया मंच'एक्स' पर अपने संदेश में कहा कि पूरा देश आज संविधान दिवस मना रहा है। इस विशेष अवसर पर वे बाबा साहेब को नमन करते हुए केंद्र और राज्य सरकारों से यह अपेक्षा करती हैं कि वे केवल संविधान दिवस मनाने तक सीमित न रहें। बल्कि संविधान के समतामूलक, मानवतावादी और कल्याणकारी उद्देश्यों पर ईमानदारी और निष्ठा से अमल करें।

जय भीम, जय भारत, जय संविधान: मायावती

मायावती ने कहा कि जनता सरकार से उम्मीद करती है कि वह संविधान में निहित मूल मूल्यों के अनुरूप कार्य करते हुए समाज के कमजोर वर्गों, बहुजन, दलित, पिछड़े और वंचित समुदायों की आकांक्षाओं को पूरा करे। उन्होंने कहा कि संविधान डॉ. आंबेडकर की ऐसी देन है, जो भारत को सामाजिक न्याय, समानता और भाईचारे के सिद्धांतों पर आगे बढ़ने की राह दिखाता है। बसपा अध्यक्ष ने अपने संदेश के अंत में कहा कि यही समय की मांग है कि सरकारें संविधान के मार्ग पर चलते हुए देश की जनता की उम्मीदों को पूरा करें। उन्होंने अपने संदेश का समापन 'जय भीम, जय भारत, जय संविधान' के नारे के साथ किया।

महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों से भरा बैग रास्ते में खोया

देवरिया। जिले के ग्राम जमुनी, पोस्ट तरकुलवा निवासी श्रीधर दुबे पुत्र स्व. परशुराम दुबे ने बताया कि दिनांक 24 नवंबर 2025 को वे गोरखपुर से देवरिया रोड होते हुए अपने गाँव आ रहे थे। इसी दौरान रास्ते में उनका महत्वपूर्ण कागजातों (डॉक्यूमेंट्स) से भरा बैग कहीं गिरकर खो गया। उन्होंने आमजन से अपील किया है कि यदि किसी भी सज्जन व्यक्ति को यह बैग मिल जाए तो कृपया संपर्क नंबर 6391879136 व 9793511854 पर उन्हें सूचित करें। सूचित करने वाले व्यक्ति को उचित पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

कोर्ट ने ईसाई सैन्य अधिकारी की बर्ख़ास्तगी बरक़रार रखी, रेजिमेंट की साप्ताहिक धार्मिक परेड आने से मना किया था

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली- सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार (25 नवंबर) को एक ईसाई अधिकारी द्वारा दायर उस याचिका को खारिज कर दिया, जिसमें सेना से उनकी बर्खास्तगी को चुनौती दी गई थी. उक्त अधिकारी ने अपनी रेजिमेंट की सासाहिक धार्मिक परेड में भाग लेने से इनकार कर दिया था, जिसके बाद भारतीय सेना से उन्हें बर्खास्त कर दिया गया था. लाइव लॉ के अनुसार, याचिकाकर्ता लेफ्टिनेंट सैमुअल कमलेसन का प्रतिनिधित्व करते हुए वरिष्ठ अधिवक्ता गोपाल शंकरनारायणन ने भारत के मुख्य न्यायधीश (सीजेआई) सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची की पीठ को बताया कि याचिकाकर्ता उन जगहों पर भाग लेते थे जहां 'सर्व धर्म स्थल' थे. लेकिन मंदिर के गर्भगृह में प्रवेश करने से इनकार करने के एकमात्र कृत्य के लिए उन्हें सेवा से बर्खास्त कर दिया गया. इस मामले की सुनवाई करते हुए सीजेआई कांत ने याचिकाकर्ता पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि यह आचरण गंभीर अनुशासनहीनता है और सेना जैसी संस्था में इसे बर्दाश्त नहीं किया जा सकता. सीजेआई कांत ने पूछा, 'क्या एक अनुशासित सशस्त्र बल में इस तरह का आचरण जायज़ है?' इसके जवाब में शंकरनारायणन ने कहा कि जिस स्थान पर याचिकाकर्ता तैनात थे, वहां कोई 'सर्व धर्म स्थल' नहीं था, बल्कि वहां केवल एक गुरुद्वारा और एक मंदिर था. शंकरनारायणन ने बताया कि याचिकाकर्ता मंदिर के बाहर खड़े थे और गर्भगृह में प्रवेश करने से इसलिए परहेज कर रहे थे क्योंकि यह कृत्य उनके ईसाई धर्म के ख़िलाफ होगा. शंकरनारायणन ने आगे कहा, 'वह आदेश की अवज्ञा करने वाले आदमी नहीं है. वह बाकी सभी मामलों में अनुशासित व्यक्ति है.' इस सीजेआई सूर्यकांत ने कहा, 'वह कैसा संदेश दे रहे हैं... उन्हें सिर्फ़ इसी बात के लिए बर्खास्त कर दिया जाना चाहिए था...यह एक सैन्य अधिकारी द्वारा की गई घोर अनुशासनहीनता है.' शंकरनारायणन ने दलील दी कि सिर्फ़ इसलिए कि कोई व्यक्ति सशस्त्र बलों में शामिल हो गया है, वह संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत प्रदत्त धर्म के अपने मौलिक अधिकार को नहीं खो देता. शंकरनारायणन ने बाद में कहा, 'उनके कमांडेंट ने उन्हें बार-बार मजबूर किया. उन्होंने कहा था कि वे मंदिर के भीतर केवल धार्मिक अनुष्ठान के दौरान प्रवेश नहीं करेंगे. विवादित फैसला वरिष्ठ अधिकारी के आदेश की अवज्ञा को लेकर है. प्रवेश कभी कोई समस्या नहीं रही, लेकिन ऐसे धार्मिक आयोजन के लिए दबाव नहीं डाला जा सकता.' उन्होंने आगे कहा कि उस कानून को देखिए जिसके तहत बर्खास्त किया गया है. एक बार जब वह कमांडेंट चले गए, तो अधिकारी की एनुअल कॉन्फिडेंशियल रिपोर्ट (एसीआर) फिर से सही रहने लगी. अधिकारी ने अपने वकील के जरिये कहा, 'मुझे किसी देवता की पूजा करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता. संविधान इतनी स्वतंत्रता देता है.' इस पर जस्टिस बागची ने एक पादरी की राय का हवाला देते हुए कहा कि अनुच्छेद 25 हर धार्मिक भावना की रक्षा के लिए नहीं, बल्कि आवश्यक धार्मिक विशेषताओं की रक्षा के लिए है. जस्टिस बागची ने कहा, 'अनुच्छेद 25 आवश्यक धार्मिक विशेषताओं की रक्षा के लिए है, न कि हर धार्मिक भावना की... आपको उस बहुसंख्यक की सामूहिक आस्था का सम्मान करना होगा जिसकी आप आज्ञा दे रहे हैं... ईसाई धर्म में मंदिर या किसी अन्य धार्मिक स्थल में प्रवेश वर्जित कहां है?' इस पर शंकरनारायणन ने जवाब दिया, 'पहला कमांडेंट कहता है कि आप किसी अन्य देवता की पूजा नहीं करेंगे.' इस पर सीजेआई कांत ने कहा, 'नेतृत्व करने वालों को मिसाल पेश करनी चाहिए. आप अपनी ट्रूप का अपमान कर रहे हैं.' जस्टिस बागची ने आगे कहा, 'जब कोई पादरी आपको सलाह देता है, तो आप वहीं इस बात को छोड़ देते हैं. आप अपनी निजी समझ से यह नहीं कह सकते कि आपका धर्म क्या अनुमति देता है. वह भी सेना की वर्दी पहनकर.' सीजेआई कांत ने कहा, 'आप भले ही 100 मामलों में उत्कृष्ट हो सकते हैं, लेकिन...भारतीय सेना अपने धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण के लिए जानी जाती है. जब आप वहां अनुशासन बनाए नहीं रख सकते... तो आप अपने ही सैनिकों की भावनाओं का सम्मान करने में विफल रहे हैं.'जैसे ही पीठ याचिका खारिज करने का आदेश सुनाने वाली थी, शंकरनारायणन ने कहा कि 'इससे गलत संदेश जाएगा.' हालांकि, सीजेआई कांत ने कहा, 'इससे एक कड़ा संदेश जाएगा।'

हेट स्पीच पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा- हमारा इरादा हर छोटी घटना पर क़ानून बनाने या निगरानी का नहीं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली- सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार (25 नवंबर) को कहा कि उसका देश में हेट स्पीच के हर मामले पर कानून बनाने या उसे निगरानी करने का कोई इरादा नहीं है और परेशान लोग पुलिस स्टेशन और हाईकोर्ट जा सकते हैं. ये टिप्पणी जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने की, जो पत्रकार कुर्बान अली और अन्य की याचिका पर सुनवाई कर रही थी. याचिकाकर्ताओं ने विभिन्न राज्यों में मुस्लिम समुदाय को व्यवस्थित तरीके से अलग-थलग किए जाने के मामलों का ज़िक्र किया था. दिलचस्प बात यह है कि 2018 में सुप्रीम कोर्ट ने हेट क्राइम (घृणा अपराध) की आलोचना की थी और कहा था कि हेट क्राइम से नागरिकों की इज्ज़त और जान की रक्षा करना सरकार का 'कर्तव्य' है. लेकिन मंगलवार को उसने अपनी ही पिछली बातों को गलत बताया. डेक्कन हेराल्ड की रिपोर्ट के मुताबिक, कोर्ट ने मंगलवार को कहा, 'हम इस याचिका की आड़ में कोई कानून नहीं बना रहे हैं. बेफिक्र रहें, हम इस देश के ङ्क, ङ्क, ङ्क इलाकों में होने वाली हर छोटी घटना पर कानून बनाने या उसे निगरानी करने के लिए तैयार नहीं हैं.' पीठ ने याचिकाकर्ताओं के वकील से कहा, 'यह कोर्ट पूरे देश में ऐसे सभी मामलों पर कैसे नज़र रख सकता है? आप अथॉरिटीज़ से संपर्क करें. उन्हें कार्रवाई करने दें; नहीं तो हाईकोर्ट जाएं.' इससे पहले 2022 में अपनी पिछली टिप्पणियों के बाद सुप्रीम कोर्ट ने 22 अक्टूबर को फिर से इस बात पर अफसोस जताया था कि 21वीं सदी में 'हमने धर्म को किस दुखद' स्तर तक गिरा दिया है. इसने कहा था कि 'देश में नफ़रत का माहौल है.' 2022 में सुप्रीम कोर्ट ने पुलिस और प्रशासन को हेट स्पीच देने वालों के ख़िलाफ़ किसी के शिकायत दर्ज करने का इंतज़ार किए बिना खुद से केस दर्ज करने का भी आदेश दिया था. इसके अलावा 2023 में एक मामले की सुनवाई करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि भारत जैसे एक धर्मनिरपेक्ष देश में धर्म के आधार पर नफरत की भावना से किए जाने वाले अपराधों के लिए कोई जगह नहीं है. शीर्ष न्यायालय ने कहा था, 'नफरती भाषण पर किसी भी तरह से भी कोई समझौता नहीं किया जा सकता.' न्यायालय ने कहा था कि यदि सरकार नफरती भाषण की समस्या को समझेगी, तभी समाधान निकलेगा. अदालत ने यह भी कहा था कि इस तरह के किसी अपराध से अपने नागरिकों की हिफाजत करना सरकार का कर्तव्य है. मंगलवार को याचिकार्ताओं की तरफ से वकील निज़ाम पाशा ने असम के एक मंत्री के बारे में ज़िक्र किया, जिन्होंने बिहार में भाजपा की चुनावी जीत के बाद एक पोस्ट शेयर करते हुए कहा था कि 'बिहार गोभी की खेती को मंजूरी देता है।'

बंगाल में SIR: संदेशखाली में कैमरे के सामने आए घुसपैठिये, बोले- हां, हमारा घर बांग्लादेश में, इलाके में गहराया तनाव

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

पश्चिम बंगाल के संदेशखाली ब्लॉक-2 के कोराकाटी ग्राम पंचायत क्षेत्र में एक बार फिर घुसपैठ का गंभीर मामला सामने आया है. स्थानीय निवासियों ने दावा किया है कि बूथ नंबर 235 के अंतर्गत कई बांग्लादेशी नागरिक वर्षों से अवैध रूप से रह रहे हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ भी ले रहे हैं. इन लोगों ने कथित तौर पर स्थानीय नेताओं की मदद से आधार कार्ड, वोटर कार्ड, राशन कार्ड जैसे भारतीय दस्तावेज बनवाए हैं. ये लक्ष्मीर भंडार जैसी मुफ्त राशन की सुविधाएं प्राप्त कर रहे हैं. विशेष गहन संशोधन (SIR) प्रक्रिया शुरू होने के बाद यह मामला प्रकाश में आया है. ग्रामीणों का आरोप है कि ये बांग्लादेशी नागरिक कई साल पहले सीमा पार करके आए थे और कुछ स्थानीय नेताओं के संरक्षण में यहां बस गए. दस्तावेज बनवाने के बाद ये लोग पूरी तरह भारतीय नागरिक बनकर रहने लगे. ग्रामीणों ने कई नाम सामने रखे हैं. इनमें एक व्यक्ति शाहीन गाजी हैं, जो स्थानीय जमीर गाजी का बेटा बताकर रह रहा है, लेकिन ग्रामीणों के अनुसार वह मूल रूप से बांग्लादेशी है. शाहीन वर्तमान में तमिलनाडु में कपड़े बेचने का काम करता है. इसी तरह एक महिला मरजीना बीबी पर भी

बांग्लादेशी होने का आरोप है. ग्रामीणों का कहना है कि वह अपने चाचा नूर अली गाजी की बेटी बनकर रह रही है।

हां मेरा घर बांग्लादेश में

हालांकि, मरजीना ने इन आरोपों से इनकार किया और कहा कि वह तो यहीं की रहने वाली है, सिर्फ उसका पति बांग्लादेशी है. मरजीना के पति गफुर मोल्ला ने खुलकर स्वीकार किया कि मेरा घर बांग्लादेश के पारुली गोरुर हाट में है. मैं अवैध तरीके से भारत आई और कभी वापस नहीं गई. गफुर के पास वोटर कार्ड नहीं है, लेकिन उसने बताया कि उसे खाद्य सुरक्षा योजना के तहत चावल-गेहूं मिलता है और उसके पास अन्य सरकारी दस्तावेज भी हैं. ग्रामीणों ने एक और महिला अंजुरा शेख का नाम लिया, जो कथित रूप से अमीरुल शेख की बेटी बनकर वोटर कार्ड बनवाई और अवैध रूप से रह रही है. इसी तरह हबीबुल शेख पर भी आरोप है कि उसने अपने ससुर को दस्तावेजों में पिता दिखाकर भारतीय पहचान बनाई और अब वह दूसरे राज्य में मजदूरी करता है. ग्रामीणों का कहना है कि बूथ नंबर 235 में ऐसे दर्जनों बांग्लादेशी परिवार रह रहे हैं. एक बुजुर्ग ग्रामीण ने नाम न छपने की शर्त पर बताया कि हम सालों से देख रहे हैं कि नए-नए लोग आकर बस जाते हैं. पहले इनकी भाषा, रहन-सहन सब अलग लगता था, लेकिन दस्तावेज बन जाने के बाद कोई कुछ नहीं बोलता. अब SIR शुरू हुआ है तो सच सामने आ रहा है. इस मामले ने इलाके में भारी तनाव पैदा कर दिया है. स्थानीय लोग प्रशासन से मांग कर रहे हैं कि सभी संदिग्धों की गहन जांच हो और घुसपैठियों को बाहर किया जाए. एक युवक ने कहा कि हमारे इलाके की असली आबादी को जो सुविधाएं मिलनी चाहिए, वे बाहर से आए लोगों को मिल रही हैं. यह सरासर अन्याय है.

बीजेपी आक्रामक

बीजेपी नेताओं ने इस मुद्दे को जोर-शोर से उठाया है. प्रदेश बीजेपी के एक वरिष्ठ नेता ने कहा कि संदेशखाली पहले शाहजहां शेख के अत्याचार के लिए चर्चा में था, अब बांग्लादेशी घुसपैठ का खुलासा हो रहा है. यह राज्य सरकार की नाकामी है कि सीमा सुरक्षा के नाम पर सिर्फ खानापूर्ती हो रही है. तृणमूल कांग्रेस ने अभी तक इस मामले पर कोई आधिकारिक बयान नहीं दिया है. स्थानीय तृणमूल नेता ने कहा कि SIR प्रक्रिया चल रही है, जो भी गलत होगा, उसे सुधार लिया जाएगा. बिना सबूत के आरोप लगाना ठीक नहीं. जिला प्रशासन ने इस मामले की जांच शुरू कर दी है. डीएम ऑफिस के एक अधिकारी ने बताया कि हमें शिकायतें मिली हैं. सभी नामों की सूची बनाई जा रही है और संबंधित दस्तावेजों की जांच की जा रही है. जो भी अवैध पाया जाएगा, उसके खिलाफ कानूनी कार्रवाई होगी. संदेशखाली पहले भी राजनीतिक हिंसा और महिलाओं पर अत्याचार के मामले में सुर्खियों में रहा था. अब बांग्लादेशी घुसपैठ का नया मामला इलाके के सामाजिक ताने-बाने पर गंभीर सवाल खड़े कर रहा है. आने वाले दिनों में स्ढ्ढक्रप्रक्रिया के दौरान और कितने ऐसे मामले सामने आएंगे, इस पर सबकी नजरें टिकी हैं।

नेत्रहीन नहीं—नेत्रदीपक: भारत की बेटियों ने छुआ विश्व का शिखर

[अंधेरे ने हार मानी: भारत की नेत्रहीन शेरनियों का विश्व वर्चस्व]
[दृष्टि नहीं, दृष्टिकोण की जीत: भारत ने जीता पहला दृष्टिबाधित महिला टी20 विश्व कप]

अँधकार की गिरहों को उधेड़कर उजाले को अपनी मुट्ठी में भर लेने का साहस—जहाँ आँखों में रोशनी भले न हो, पर भीतर का आकाश सपनों से दिपदिपाता हो—उसी पवित्र जगह पर भारत की बेटियाँ वह इतिहास रच रही हैं जो केवल धरती की धूल को सम्मान नहीं देता, बल्कि समाज की उन कठोर दीवारों को भी ध्वस्त करता है जो दृष्टि की कमी को सीमा समझ बैठी थीं। ये बेटियाँ साबित करती हैं—जब मन देखना सीख ले, तो दुनिया की हर बाधा धुंधली पड़ जाती है। जब कोलंबो के पी. सरवणमुत्तू स्टेडियम में सफेद गेंद खड़खड़ाती हुई विकेट की ओर लुढ़की और फुला सरेन ने उसे एक करारे शॉट में बाउंड्री के पार भेजा, तो उस एक पल में सदियों की चुप्पी टूट गई। भारत ने नेपाल को सात विकेट से रौंदकर पहला दृष्टिबाधित महिला टी20 विश्व कप (11 नवंबर से 23 नवंबर 2025 तक कोलंबो, श्रीलंका में आयोजित) अपने नाम कर लिया। बारह ओवर, तीन विकेट, 117 रन। लक्ष्य पूरा। यह सिर्फ़ जीत नहीं थी; यह उन अनगिनत भारतीय महिलाओं की सामूहिक पुकार थी, जिन्हें कभी मैदान से वंचित किया गया, घर की दीवारों में बाँध दिया गया, जिनकी आँखें तो खुली थीं पर सपनों को अंधा कर दिया गया था। आज उन सपनों ने काली पट्टी बाँधकर दुनिया को समझा दिया—अंधेरा आँखों में नहीं, इरादों में बसता है—और हमारे इरादे धधक रहे हैं। इस उद्घाटन दृष्टिबाधित महिला टी20 विश्व कप में नियमों की कठोरता ने खेल को एक अनुशासन नहीं, एक जीवंत कला बना दिया। सोचिए उस गेंदबाज़ को, जो पहले धीमे से पूछता है, 'तैयार हो?' और फिर 'प्ले!' की पुकार के साथ अंडरआर्म गेंद डालता है, जिसे कम-से-कम एक उछाल अनिवार्य है। हर टीम में 11 योद्धा—पर उनमें कम से कम चार पूर्ण नेत्रहीन, बी-1 श्रेणी के (खिलाड़ी पट्टी बाँधते हैं), जिनके हर रन को दोगुना गिना जाता है। बी-1 बल्लेबाज़ रनर संग खेलते हैं, स्टंपिंग से मुक्त। फील्डर अपनी जगह ताली से बताते हैं, और आंशिक दृष्टि वाले बी-2 (2 मीटर तक) और बी-3 (6 मीटर तक) अपनी सीमित रोशनी में दुनिया को फिर से आकार देते हैं। यह क्रिकेट नहीं, एक संवेदनशील संवाद है—आवाजों का, स्पर्श का, और उस अदृश्य विश्वास का। और यही विश्वास कहता है—अंधेरा आँखों में हो सकता है, पर जीत हमेशा उस उजाले की होती है जो भीतर जलता है। यह विश्व कप पहला था, इसलिए इसके हर रन में इतिहास लिखा जा रहा था। छह देश—ऑस्ट्रेलिया, पाकिस्तान, श्रीलंका, संयुक्त राज्य अमेरिका, नेपाल और भारत—एक ही मैदान पर, सबकी आँखें पट्टी से ढकी, फिर भी दृष्टि सबसे साफ़ भारत की थी। पूरे टूर्नामेंट में उसने एक भी मैच नहीं गंवाया। सेमीफाइनल में ऑस्ट्रेलिया बिखर गया, और फाइनल में नेपाल को इस कदर दबोचा गया कि पूरी पारी में उसके बल्ले से सिर्फ़ एक चौका निकला—सिर्फ़ एक। बाकी सब डॉट या विकेट। यह सिर्फ़ दबदबा नहीं था; यह अस्तित्व की धमक थी। फुला सरेन की प्लेयर ऑफ द मैच नाबाद 44 रन की पारी कोई सांख्यिकीय उपलब्धि नहीं, बल्कि झारखंड की उन आदिवासी बस्तियों से उठी लौ थी जहाँ बिजली की रौशनी आज भी संकोच में है, मगर हौसले सदियों से जलते आए हैं। उसने हर रन बी-1 श्रेणी में खेलते हुए बनाया—यानी पूरी तरह नेत्रहीन होकर। और नियम कहता है, क्ष्ण का हर रन दोगुना गिना जाता है। यानी मैदान पर उसके 44 रन, स्कोरबोर्ड की दृष्टि में 88 बनकर दहाड़े—समाज की उन सारी आवाज़ों के मुँह पर, जिन्होंने कभी कहा था, 'तू अंधी है, तू क्या कर लेगी?' पाकिस्तान की मेहरीन अली ने इस टूर्नामेंट में 600 से ज़्यादा रन बरसाए—78 गेंदों पर 230, टी-20 इतिहास की पहली डबल सेंचुरी। फिर भी सेमीफाइनल में नेपाल ने उसकी गति रोक दी। मेहरीन टूटी नहीं; उसने बस इतना कहा—'मेरा खेल खत्म नहीं हुआ।' और उसी सच को भारत की टीम ने उजागर कर दिया। खेल कभी समाप्त नहीं होता, वह बस अपना रूप बदलता है। आज उसका रूप विश्व कप की चमकती ट्रॉफी है; कल वही रूप लाखों नेत्रहीन लड़कियों में जगेगा, जो अब गली-मोहल्लों में प्लास्टिक की गेंद की खड़खड़ाहट सुनकर अपनी पहली बल्लेबाज़ी रचेंगी—और उस खड़खड़ाहट में अपने भविष्य की आवाज़ पहचानेंगी। हम उस देश में रहते हैं जहाँ दिव्यांगता को योग्यता नहीं, दया की चादर ओढ़ा दी जाती है। ऐसे में यह जीत सिर्फ़ एक ट्रॉफी नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का पहला अंकुर है। 2011 की जनगणना अनुसार, भारत के 2.68 करोड़ दिव्यांग नागरिकों में लगभग 50 लाख नेत्रहीन हैं, जिनमें आधे से अधिक महिलाएँ। लेकिन खेल के मैदान पर उनकी उपस्थिति लगभग शून्य—क्रिकेट तो उनकी दुनिया में मानो किसी कल्पना-लोक की चीज़ रही। यही कारण है कि डब्ल्यूबीसीसी के तहत खेला गया यह विश्व कप सिर्फ़ टूर्नामेंट नहीं, सशक्तिकरण का जीवंत प्रतीक बन गया। अरबों का बजट रखने वाले क्रिकेट बोर्ड के सामने ब्लाइंड क्रिकेट को आज भी फंड की गुहार लगानी पड़ती है। फिर भी ये बेटियाँ विश्व चैंपियन बनकर लौटीं। यह जीत नहीं—व्यवस्था के गाल पर गूँजता हुआ थप्पड़ है। यह सवाल है—जब ये लड़कियाँ आँखें बंद करके विश्व कप जीत सकती हैं, तो आँखें खोलकर हमारा सिस्टम इन्हें सम्मान देने से अब तक क्यों अंधा बना हुआ है? अब समय आ गया है साफ़-साफ़ फैसला करने का—या तो हम इन बेटियों को वही सम्मान दें जिसके वे जन्म से हक़दार हैं: राष्ट्रीय परेड में स्थान, स्टेडियमों की दीवारों पर उनके नाम, और IPL जैसी भव्य एक ब्लाइंड महिला लीग; या फिर हम अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ इन्हें फिर से अनदेखा कर दें। पर याद रखें—इतिहास भुलक्कड़ नहीं होता। 2025 का यह नवंबर साफ़ कर चुका है कि भारत की असली ताकत उसकी बेटियों की धड़कनों में बसती है—भले ही उनकी आँखें देखती हों या नहीं। फुला सरेन, गंगाधारी महतो, रवीना, दीपाली—ये नाम अब सिर्फ़ स्कोरकार्ड पर नहीं, बल्कि इस देश की चेतना, उसके हर कोने, हर स्मृति और हर गर्व में दर्ज होने चाहिए। इस जीत की गूंज, कोलंबो से दिल्ली तक, सोशल मीडिया पर तूफान बन गई, जहां आम लोग अपनी कहानियां साझा कर रहे हैं। एक मां ने लिखा, 'मेरी बेटी भी अब आंखों की कमी से नहीं डरेगी।' यह भावनात्मक उफान, तो जैसे नदी का बहाव जो बांध तोड़ देता है।

नेपाल की हार में भी विजय है—उनकी सरिता घिर्मीरे ने साबित किया कि हिमालय की बेटियां भी मैदान पर गरज सकती हैं। भारत की अजेयता, टूर्नामेंट भर बरकरार, तो जैसे एक मंत्र: 'अंधकार में भी प्रकाश है, बस सुनना सीखो।' भविष्य? अगला विश्व कप, 2027 में प्रस्तावित, भारत यदि अकेला मेजबान बना और फुला, सरिता, मेहरीन साथ खेलीं—तो वह क्रिकेट का महोत्सव नहीं, मानवता का उत्सव होगा। वहाँ गेंद की खड़खड़ाहट संगीत बन जाएगी, और पट्टीबद्ध आँखें सपनों की खुली खिड़कियाँ। भारत की बेटियों ने साबित कर दिया—इतिहास रचने के लिए आंखें नहीं, हौसला चाहिए। और यह हौसला, अब अमर हो चुका है। जो देश अपनी बेटियों को आँखों पर पट्टी बाँधकर भी विश्व विजेता बना दे—उसे कोई ताकत, कोई अंधेरा, कोई संदेह हरा नहीं सकता। यह विश्व कप नहीं था—यह घोषणा थी। भारत की नेत्रहीन बेटियों की घोषणा कि अंधेरा चाहे जितना भी गहरा क्यों न हो, हम उसी के भीतर अपना सूरज गढ़ देते हैं।

प्रो. आरके जैन

संपादकीय

भारतीय लोकतंत्र का प्राणस्वर — संविधान दिवस

[संविधान: संघर्षों का संकलन, भविष्य का संकल्प]
[संविधान दिवस — जब भारत ने अपने होने का अर्थ स्वयं तय किया]

भारत की सामूहिक चेतना में कुछ तिथियाँ यूँ अंकित हैं कि वे बीतती नहीं—मन और इतिहास दोनों में सतत स्पंदित रहती हैं। ये तिथियाँ हमें बार-बार याद दिलाती हैं कि राष्ट्र का निर्माण भूगोल से नहीं, बल्कि विचारों, संघर्षों और उन मूल्यों से होता है। 26 नवम्बर ऐसा ही दिन है—एक ऐसा मौन, दृढ़ और प्रखर स्मरण जिसने भारत को केवल शासन प्रणाली ही नहीं दी, बल्कि एक नैतिक दिशा, एक दार्शनिक आधार और भविष्य गढ़ने की शक्ति भी दी। यही वह क्षण था जब भारतीय संविधान सभा ने यह घोषित किया कि अब भारत अपना पथ स्वयं चुनेगा; यह कि अब कोई शक्ति हमें यह नहीं बताएगी कि कैसे जीना है, कैसे सोचना है, और किस तरह इस विशाल विविधता को एक साझा पहचान में पिरोकर आगे बढ़ना है। संविधान को अंगीकृत करने की इस ऐतिहासिक प्रक्रिया के पीछे केवल विधायी कौशल नहीं, बल्कि समाज को भीतर से पढ़ने वाली एक गहरी दृष्टि थी—एक ऐसी दृष्टि जो समझती थी कि भारत को केवल प्रशासनिक खाका नहीं चाहिए, बल्कि ऐसा जीवंत दस्तावेज़ चाहिए जो हर भारतीय को यह महसूस कराए कि वह इस राष्ट्र का अनिवार्य हिस्सा है।

दो वर्ष, ग्यारह महीने और अठारह दिनों तक चली चर्चाओं के दौरान संविधान सभा के अनेक सदस्य केवल विधिक विषय नहीं, बल्कि समाज की पीड़ा, जनता की आकांक्षाएँ, और स्वतंत्रता की कीमत को साथ लेकर बैठे थे। वे समझते थे कि एक नए भारत को आकार देना केवल कानून लिख देने से पूरा नहीं होगा; यह न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसे मूल्यों को जीवन का आधार बनाकर ही संभव होगा। डॉ. भीमराव आंबेडकर के नेतृत्व में रचा गया भारतीय संविधान किसी एक मस्तिष्क की उपज नहीं, बल्कि उन सैकड़ों विमर्शों, हजारों सुझावों और अनगिनत संशोधनों का सघन परिणाम है, जिनमें भारत के भविष्य की हर संभावना को गहराई से परखा गया। इसमें कोई भी तत्व संयोगवश नहीं आया—हर शब्द सुविचारित, हर अनुच्छेद दूरदृष्टि से प्रेरित, और हर अधिकार नागरिक की गरिमा को केंद्र में रखकर गढ़ा गया। इसी कारण इसे 'जीवित दस्तावेज़' कहा जाता है—क्योंकि यह समय से संवाद करता है, परिस्थितियों के साथ स्वयं को रूपांतरित करता है, और बदलते युग में भी नागरिकों के साथ कदम मिलाकर चलने की शक्ति रखता है। 26 नवम्बर का महत्व इसीलिए गहरा है कि यह केवल संविधान की अंगीकृति का दिन नहीं, बल्कि उस वैचारिक क्रांति का प्रतीक भी है जिसने भारत को एक आधुनिक लोकतंत्र बनने का आत्मविश्वास दिया। यह हमें यह समझने का अवसर देता है कि राष्ट्र-निर्माण अधिकारों की सूची बनाने से नहीं, बल्कि उन अधिकारों का सम्मान करने वाले समाज को गढ़ने से होता है। यह दिन याद दिलाता है कि प्रस्तावना में लिखा 'हम, भारत के लोग...' केवल एक उद्घोषणा नहीं—यह एक साझा प्रतिज्ञा है कि हम एक-दूसरे के अधिकारों की रक्षा करेंगे, विविधता का सम्मान करेंगे, और भेदभाव की हर दीवार को गिराने की दिशा में प्रयासरत रहेंगे। संविधान दिवस यह भी आग्रह करता है कि हम अपने कर्तव्यों की ओर ध्यान दें, क्योंकि लोकतंत्र केवल स्वतंत्रता की घोषणा से नहीं, अनुशासन और उत्तरदायित्व की भावना से फलता-फूलता है। यदि अधिकार हमें शक्तिशाली बनाते हैं, तो कर्तव्य हमें संवेदनशील बनाते हैं। यह दिन हमें उन अनदेखी लड़ाइयों की भी याद दिलाता है, जो न्याय और समानता के लिए सड़क से लेकर संसद तक लड़ी गईं, और आज भी लड़ी जा रही हैं। संविधान केवल शासकीय प्रणाली का आधार नहीं; यह उस संघर्ष का जीवंत स्मारक है, जिसने भारत को जाति, धर्म और असमानता की पुरानी जंजीरों से मुक्त करने का संकल्प लिया। इस दिन का वास्तविक अर्थ तब पूरा होता है जब हम औपचारिकताओं से ऊपर उठकर स्वयं से यह प्रश्न पूछें—क्या हम अपनी स्वतंत्रता का उपयोग विवेकपूर्ण ढंग से कर रहे हैं, या केवल सुविधा के अनुसार? क्या हम भिन्नताओं के बावजूद समाज में सौहार्द बनाए रखने का प्रयास करते हैं, या मतभेदों की दीवारों को और ऊँचा कर देते हैं? क्या हम अपने संविधान के मूल्यों को केवल पाठ्यपुस्तक तक सीमित रखते हैं, या उन्हें अपने आचरण का हिस्सा बनाते हैं? संविधान दिवस असल में वही ठहराव है, जहाँ राष्ट्र हमसे सवाल नहीं करता—हम स्वयं से करते हैं। यह वह क्षण है जब हम अपने नागरिक होने के अर्थ को नए सिरे से समझते हैं, और यह पहचानते हैं कि देश की प्रगति क़ानूनों में नहीं, बल्कि उन्हें जीने की हमारी प्रतिबद्धता में बसती है। 26 नवम्बर इसलिए महज़ स्मरण नहीं— यह प्रेरणा का स्रोत है, जिम्मेदारी का संकेत है और भविष्य की दिशा दिखाने वाली अग्निशिखा भी है।

यह वही उजास है जो समझाता है कि भारत की वास्तविक शक्ति उसकी संख्या या वैभव में नहीं, बल्कि उस संवैधानिक दृष्टि में है जो हर नागरिक को गरिमा, हर व्यक्ति को अधिकार और हर जीवन को अवसर देने का वचन देती है। यह दिन बताता है कि भारत को महान केवल शासन नहीं, बल्कि सजग और संवेदनशील नागरिक बनाते हैं—और उस सजगता की शुरुआत संविधान को समझने, अपनाने और उसे अपने आचरण में रूपांतरित करने से होती है। इसी अर्थ में 26 नवम्बर केवल अतीत नहीं; यह हर भारतीय के भीतर जलती वह चिर-चेतना है जो याद दिलाती है कि राष्ट्र की असली पहचान उसके लोगों की नीयत, नैतिकता और संवैधानिक प्रतिबद्धता में बसती है।

प्रो. आरके जैन

बीएलओ का बीमा करवाये - निर्वाचन आयोग

देश के बारह राज्यों में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्य की समय-सीमा के चलते कार्य की अधिकता के कारण मध्य प्रदेश सहित कई राज्यों से बीएलओ की आत्महत्या की खबरें आना वाकई बेहद दुखद है! एस आई आर कार्य के चलते बीएलओ की बढ़ती आत्महत्या की खबर भारत निर्वाचन आयोग के कानों तक पहुँची, तो आयोग द्वारा तत्काल राज्यों से बीएलओ के संबंध में रिपोर्ट मांगी गई। निश्चय ही भारत निर्वाचन आयोग द्वारा राज्यों से बीएलओ की बढ़ती आत्महत्या की रिपोर्ट प्राप्त होने के बाद बीएलओ के हितार्थ कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय भी लिया जा सकता है। भारत निर्वाचन आयोग से एक निवेदन एवं सुझाव है कि वह निर्वाचन कार्य में संलग्न देशभर के बीएलओ का बीमा करवाएं, ताकि किसी भी बीएलओ के साथ यदि कभी कोई घटना घटती है, तो उसके परिवार को उसके नहीं रहने पर आर्थिक रूप से मजबूर नहीं होना पड़े। आज देशभर में अधिकांश बीएलओ शिक्षक हैं या फिर अन्य विभागों के तृतीय श्रेणी के कर्मचारी हैं, जिन्हें कुछ राज्य सरकार बीमा और पेंशन तक की सुविधा उचित रूप से नहीं दे पा रही हैं। फिर भी कर्मचारी सरकार के सभी कार्यों का पालन ईमानदारी से करते हैं । देश के हर राज्य में सरकारी कर्मचारी अपनी क्षमता से अधिक कार्य करके सरकार की योजनाओं को जमीनी धरातल पर उतारते हैं। कुछ दो-पांच प्रतिशत कर्मचारी भले राजनीतिक शह के चलते अपने कार्य से बच जाते हैं, लेकिन यह याद रखना चाहिए कि कर्मचारियों के बूते ही नौकरशाही चलती है। पिछले कुछ वर्षों से एक चलन बन गया है कि अव्वल आने की चाहत में कुछ जिलाधीश राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के हाथों पुरस्कृत होने की इच्छा में अपने कर्मचारियों पर क्षमता से कहीं अधिक कार्य करने का दबाव डालते हैं। उनकी मंशानुरूप कार्य नहीं कर पाने वाले कर्मचारियों का या तो वेतन रोक लिया जाता है या फिर निलंबन किया जाता है, जिससे निचले स्तर के कर्मचारियों पर अपने ही अधिकारियों का दबाव अत्यधिक बढ़ जाता है और कर्मचारी परेशान होकर आत्महत्या तक को मजबूर हो जाते हैं। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण कार्य में बीएलओ की आत्महत्या के पीछे मुख्यतः यही कारण है कि जिले के एसी चेंबर में बैठने वाले और एसी गाड़ियों में घूमने वाले कुछ अधिकारी जमीन पर चलने वाले बीएलओ की मजबूरी नहीं समझ पाते और अनावश्यक कार्य का दबाव डालते हैं, जिससे कर्मचारी आत्महत्या को मजबूर होते हैं । भारत सरकार और भारत निर्वाचन आयोग को चाहिए कि वर्षभर चलने वाले निर्वाचन जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रम में संलग्न रहने वाले जमीनी स्तर के सभी बीएलओ कर्मचारियों का बीमा करवाया जाए और उनकी पदस्थ संस्था में राष्ट्रीय कार्यक्रम के दौरान उनके कार्य का बोझ कम किया जाए। साथ ही, जिले की अफसरशाही को भी भौगोलिक स्थितियों के आधार पर अपने कर्मचारियों का मनोबल तोड़ने की बजाय

बढ़ाकर कार्य करने की नसीहत देना होगी। तभी बीएलओ और अन्य कर्मचारी निर्भीक होकर अपने कार्य को अधिक कुशलता से संपन्न करेंगे, जिससे आत्महत्या जैसी घटनाएँ नहीं होंगी और शासकीय विभागों की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्नचिह्न नहीं लगेगा ।अतएव निर्वाचन कार्य में संलग्न देश के बीएलओ का निर्वाचन आयोग को बीमा करवाने पर विचार करना चाहिए।

अरविंद रावल

हे राम माँ का दूध भी सुरक्षित नहीं रहा!

सृष्टि की शुरुआत से यह माना जाता है कि माँ का दूध नवजात बच्चों के लिए अमृत समान है, क्योंकि इसमें प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है, जो उन्हें संक्रमण के प्रभाव से बचाता है। जैसा कि आप सभी लोग जानते हैं कि चिकित्सकों की राय के अनुसार नवजात मां का दूध शिशु के जीवन को न सिर्फ पहली ढाल होता है, बल्कि रोगों से सुरक्षा प्रदान करता है। साथ ही मस्तिष्क का विकास में सहयोगी और प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने की प्राकृतिक शक्ति प्रदान करता है। लेकिन सोचिए, अगर वही दूध किसी जहर के साथ मिलकर बच्चे तक पहुंचे, तो कितना खतरनाक हो सकता है। यह विचार ही किसी भी माता-पिता या समाज को हिलाने के लिए काफी है। हाल ही में सामने आए एक अध्ययन ने पूरे देश को चौंका दिया है, जिससे पता चलता है कि माँ का दूध ही बच्चे के लिए जहर बनता जा रहा है। एक अध्ययन के अनुसार बिहार में स्तन दूध के नमूनों में यूरेनियम की मौजूदगी पायी गयी है। इस अध्ययन ने देशभर में चिंता की लहर पैदा कर दी है। पटना स्थित महावीर कैंसर संस्थान द्वारा की गई एक रिसर्च में बिहार की महिलाओं के स्तन दूध में यूरेनियम पाया जितना गंभीर है, उतनी ही चिंताजनक भी, क्योंकि यह सीधे-सीधे नवजात बच्चों के स्वास्थ्य से जुड़ा मामला है। यह अध्ययन अक्टूबर 2021 से जुलाई 2024 के बीच बेगूसराय, भोजपुर, समस्तीपुर, खगड़िया, कटिहार और नालंदा जिलों में 17 से 35 वर्ष की 40 महिलाओं पर किया गया। जांच में पाया गया कि सभी नमूनों में यूरेनियम (यू-238) मौजूद था। यह मात्रा 0 से 5.25 जी/एल के बीच दर्ज की गई। ब्रिटिश जर्नल 'साइंटिफिक रिपोर्ट्स' में प्रकाशित इस शोध में कहा गया कि ब्रेस्ट मिल्क के नमूनों में 5 पीपीवी (प्रति अरब भाग) तक यूरेनियम पाया गया। यूरेनियम एक रेडियोधर्मी तत्व है, जो लंबे समय तक शरीर में रहने पर किडनी, हड्डियों, और कोशिकाओं के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। स्टडी में स्पष्ट किया कि इस स्तर का तत्काल प्रभाव कम हो सकता है, परंतु शिशु यूरेनियम के एक्सपोजर के प्रति वयस्कों की तुलना में अधिक संवेदनशील होते हैं। उनके शरीर में डिटॉक्सिफिकेशन क्षमता सीमित होती है, जिससे कोई भी रेडियोधर्मी तत्य अधिक तेजी से नुकसान पहुंचा सकता है। हालांकि इस रिसर्च में बताया गया है कि 40 माताओं के दूध में यूरेनियम मिला, लेकिन ज्यादातर मामलों में इसका स्तर अनुमेय सीमा से नीचे था। लगभग 70 प्रतिशत शिशुओं में संभावित गैर-कार्सिनोजेनिक जोखिम देखा गया, पर इसका वास्तविक स्वास्थ्य प्रभाव कम होने की संभावना है। इसके बावजूद, यह तथ्य कि सभी महिलाओं के दूध में यूरेनियम मौजूद है, अपने आप में एक गंभीर चेतावनी है। परमाणु वैज्ञानिक और एनडीएमए के सदस्य डॉ. दिनेश के. असवाल का कहना है कि इसमें डरने की जरूरत नहीं है, क्योंकि पाया गया स्तर विश्व स्वास्थ्य संगठन की सुरक्षित सीमा से छह गुना कम है। डब्ल्यूएचओ पीने के पानी में यूरेनियम की सुरक्षित सीमा 30 पीपीबी तक मानता है, जबकि बिहार के नमूनों में सिर्फ 5 पीपीबी पाया गया। विशेषज्ञों ने यह भी बताया कि स्तनपान कराने वाली माताओं के शरीर में गया अधिकांश यूरेनियम मूत्र के जरिए बाहर निकल जाता है, और स्तन के दूध में इसकी मात्रा बहुत कम होती है। लेकिन यहां बड़ा सवाल यह नहीं कि स्तर सुरक्षित सीमा से कम है या ज्यादा। असली चिंता यह है कि आखिर महिलाओं के दूध में यूरेनियम पहुंच क्यों रहा है? यह संकेत है कि भूजल में यूरेनियम की उपस्थिति लगातार चढ़ रही है। शोध में बताया गया है कि भारत के लगभग 151 जिलों और 18 राज्यों में भूजल यूरेनियम प्रदूषण पाया जा चुका है। यह आंकड़ा सिर्फ बिहार ही नहीं, बल्कि पूरे देश के लिए खतरे की घंटी है। एक और महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि शिशु अपने शरीर से यूरेनियम को तुरंत बाहर नहीं निकाल पाते, इसलिए वे अपनी माताओं की तुलना में अधिक संवेदनशील होते हैं। उनका शरीर विकसित हो रहा होता है और किसी भी रेडियोधर्मी तत्व का असर उन पर अधिक तेजी से पड़ सकता है। शोध में कहा गया है कि किसी-किसी जगह में स्तन दूध के माध्यम से शिशुओं को यूरेनियम का संपर्क 'खतरनाक स्तर' पर है और यह उनके स्वास्थ्य पर प्रभाव डाल सकता है। बच्चों पर यूरेनियम का असर सबसे खतरनाक इसलिए भी होता है, क्योंकि उनके शरीर में हेवी मेटल्स को बाहर निकालने की क्षमता बेहद कम होती है। इसके कारण किडनी का विकास प्रभावित हो सकता है, न्यूरोलॉजिकल विकास रुक सकता है, आईक्यू कम हो सकता है और मानसिक स्वास्थ्य पर भी दीर्घकालिक असर पड़ सकता है। यह सिर्फ स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों की बौद्धिक क्षमता और राष्ट्रीय विकास से जुड़ा सवाल है। इस स्थिति पर सरकार और समाज दोनों को गंभीरतापूर्वक सोचना होगा। अगर भूजल में भारी धातुओं और रेडियोधर्मी पदार्थों का स्तर बढ़ रहा है, तो इसका असर सिर्फ दूध पर नहीं, बल्कि पेयजल, फसलों और पूरे खाद्य चक्र पर भी पड़ेगा। आपको बता दें कि यह केवल चिकित्सा का मुद्दा नहीं, बल्कि पर्यावरण, विज्ञान और प्रशासन का संयुक्त सवाल है। यह भी जरूरी है कि इस मुद्दे को माताओं के दोष के रूप में पेश न किया जाए। महिलाएं इस संकट की वजह नहीं, बल्कि इसकी पीड़ित हैं। स्तनपान बंद करने या डर पैदा करने से समस्या हल नहीं होगी। असली समाधान भूजल की गुणवत्ता सुधारने, जलस्रोतों के परीक्षण को मजबूत करने और प्रदूषण के स्रोतों का पता लगाने से होगा। सरकार को चाहिए कि तत्काल उन इलाकों में पानी की जांच शुरू कराए जहां से नमूने लिए, गए थे। पानी शुद्धिकरण की योजनाओं को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। स्वास्थ्य विभाग को माताओं और बच्चों की नियमित जांच करानी चाहिए। साथ ही, वैज्ञानिकों और पर्यावरण विशेषज्ञों को मिलकर यह समझना होगा कि भूजल में यूरेनियम आखिर क्यों बढ़ रहा है, क्या यह प्राकृतिक

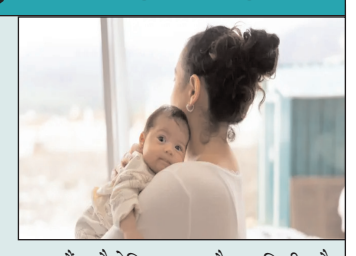

कारण हैं, औद्योगिक प्रदूषण है, या किसी और वजह से मिट्टी और पानी में बदलाव हो रहा है? इस समस्या को हल्के में लेना भविष्य की पीढ़ी के साथ अन्याय होगा। यह सिर्फ एक शोध नहीं, बल्कि चेतावनी है कि हमारा पर्यावरण धीरे-धीरे प्रदूषण के ऐसे स्तर तक पहुंच रहा है जो मानव स्वास्थ्य के लिए घातक हो सकता है। बच्चों का स्वास्थ्य किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे बड़ी प्राथमिकता होनी चाहिए। इसलिए सरकारों को तुरंत कदम उठाने होंगे। स्तनपान आज भी शिशु के लिए सबसे अच्छा आहार है और इसे किसी भी स्थिति में बंद नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन साथ ही, यह भी जरूरी है कि महिलाएं जिस वातावरण में रहती हैं, यह सुरक्षित हो। पानी, हवा और मिट्टी की गुणवत्ता सुनिश्चित करना सरकार की जिम्मेदारी है। आने वाली पीढ़ी को सुरक्षित रखना किसी भी समाज का सबसे बड़ा कर्तव्य है। देखा जाए तो यह अध्ययन देश के स्वास्थ्य ढांचे को आईना दिखाता है। यह बताता है कि पर्यावरण संकट सबसे पहले और सबसे ज्यादा बच्चों को प्रभावित करता है। आज अगर बिहार के 40 नमूनों में यूरेनियम पाया गया है, तो कल यह संख्या बढ़ सकती है। यह समय है कि सरकारें, वैज्ञानिक संस्थान, और समाज मिलकर इस समस्या की जड़ तक जाएं। भविष्य की पीढ़ी की सुरक्षा के लिए आज सख्त कदम उठाएं। शिशुओं के लिए यह खबर किसी खतरे की घंटी से कम नहीं है। डॉक्टर बताते हैं कि नवजातों के अंग विकास के चरण में होते हैं, जिससे वे विषैली धातुओं को बड़ों के मुकाबले अधिक तेजी से अवशोषित करते हैं। शरीर का वजन कम होने के कारण उन पर जोखिम कई गुना बढ़ जाता है। ब्रेस्ट मिल्क के जरिए शरीर में जाने वाला यूरेनियम बच्चों की किडनी को नुकसान पहुंचा सकता है, न्यूरोलॉजिकल (दिमागी) दिक्कतें पैदा कर सकता है और आगे चलकर कैंसर का बड़ा कारण बन सकता है। वैश्विक स्तर पर अमेरिका, कनाडा और चीन जैसे देशों के भूजल में यूरेनियम मिलने की खबरें आती रही हैं, लेकिन बिहार में इसका ब्रेस्ट मिल्क में पाया जाना समस्या को एक नए और गंभीर स्तर पर ले जाता है। हालांकि, इन चौंकाने वाले नतीजों के बावजूद शोधकर्ताओं ने माताओं को सलाह दी है कि वे स्तनपान कराना बंद न करें, क्योंकि मां का दूध शिशुओं के लिए पोषण का सबसे सर्वोत्तम स्रोत है, लेकिन सरकार को इसके स्रोतों का पता लगाकर जल्द रोकथाम करनी होगी। ताकि माँ का दूध अमृत बना रहे।

मनोज कुमार अग्रवाल

संविधान दिवस: बदलते भारत की लोकतांत्रिक धड़कन

भारत में हर वर्ष 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाया जाता है—एक ऐसा दिन जो केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि भारतीय लोकतंत्र की आत्मा से सीधा जुड़ा हुआ उत्सव है। यह वही तारीख है जब 1949 में संविधान सभा ने गहन विचार-विमर्श और लगभग तीन वर्षों की कठिन परिश्रमपूर्ण प्रक्रिया के बाद भारतीय संविधान को औपचारिक रूप से स्वीकार किया। यह दस्तावेज़ मात्र क़ानूनों का संग्रह नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत की सामूहिक आकांक्षाओं, संघर्षों और भविष्य के सपनों का जीवंत घोषणापत्र है। संविधान का निर्माण उस दौर में हुआ जब देश औपनिवेशिक शोषण से निकलकर लोकतांत्रिक स्वतंत्रता की ओर बढ़ रहा था, और इसके निर्माताओं ने यह सुनिश्चित किया कि यह संविधान न केवल तत्कालीन भारत की आवश्यकताओं को पूरा करे, बल्कि आने वाले समय की विषमताओं और चुनौतियों का भी सामना कर सके। संविधान बनने की प्रक्रिया अपने आप में एक महान लोकतांत्रिक साहसिक कार्य थी। 9 दिसंबर 1946 को संविधान सभा की पहली बैठक हुई, और इसके साथ ही एक नए राष्ट्र की रूपरेखा लिखे जाने का दायित्व शुरू हुआ। लगभग 2 साल 11 महीने और 18 दिन—यानी 166 बैठकों के दौरान—इस सभा ने भारत की विविध भाषा, संस्कृति, विचारधाराओं और सामाजिक संरचनाओं को समझते हुए एक ऐसा दस्तावेज़ तैयार किया जो विश्व में सबसे विस्तृत और व्यवहारिक संविधानों में आज भी गिना जाता है। 26 नवंबर 1949 को इसे सदन ने अपनाया और दो महीने बाद, 26 जनवरी 1950 से लागू करते हुए भारत को एक संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य घोषित किया गया। यही कारण है कि गणतंत्र दिवस का उत्सव भी इसी दिन मनाया जाता है। संविधान दिवस का औपचारिक उत्सव 2015 में शुरू हुआ, जब भारत सरकार ने डॉ. भीमराव रामजी आंबेडकर की 125वीं जयंती को विशेष रूप से चिह्नित करने का निर्णय लिया। डॉ. आंबेडकर को भारतीय संविधान का मुख्य शिल्पकार माना जाता है। उन्होंने न केवल संविधान निर्माण समिति के अध्यक्ष के रूप में अपनी विद्वता और दूरदर्शिता का परिचय दिया, बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि स्वतंत्र भारत की नींव सामाजिक न्याय, समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर टिकी रहे। उनका योगदान केवल विधिक नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का भी आधार था। संविधान के माध्यम से उन्होंने भारत को न केवल अधिकारों से समृद्ध किया, बल्कि नागरिकों को उनके कर्तव्यों के प्रति भी सजग किया। संविधान की प्रस्तावना में निहित न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व—ये केवल शब्द नहीं, बल्कि भारतीय समाज के निर्माण के मूल स्तंभ हैं। आज जब संविधान दिवस मनाया जाता है, तो यह केवल एक औपचारिकता नहीं, बल्कि आत्ममंथन का अवसर भी है। संविधान हमें लगातार यह याद दिलाता है कि लोकतंत्र केवल चुनावों या सरकारों तक सीमित नहीं होता, बल्कि नागरिक चेतना,

संक्षिप्त खबरें

पुरासी गांव निवासी संतोष कुमार ने विपक्षीगणों द्वारा सरकारी पेड़ बेचे जाने की किया शिकायत

महराजगंज रायबरेली। विकास खण्ड क्षेत्र के पुरासी गांव निवासी संतोष कुमार पुत्र बरातीलाल ने उपजिलाधिकारी महराजगंज व मुख्यमंत्री से गांव की ही निवासी विपक्षीगणों द्वारा चकमार्ग के सरकारी पेड़ बेचे जाने की शिकायत की है। शिकायत में संतोष कुमार पुत्र बरातीलाल ने बताया कि पुरासी गांव में चंद्रमणि दीक्षित के खेत से लेकर राघव शरण द्विवेदी की बाग तक जो चक मार्ग स्थित है, उस पर दो जामुन एवं तीन गूलर के पेड़ लगे है। चकमार्ग पर लगी पेड़ों को गांव के ही निवासी विपक्षीगण अजय कुमार मिश्रा पुत्र शंभू प्रसाद मिश्र व शंभू प्रसाद मिश्रा पुत्र नाथू मिश्रा द्वारा अपना बताकर बेच दिया है, जबकि सार्वजनिक चक मार्गपर स्थित पेड़ों से विपक्षीगणों का कोई वास्ता व सरोकार नहीं है। प्रार्थी द्वारा जब पेड़ों की बिक्री की शिकायत की गई तो विपक्षीगणों ने प्रार्थी के साथ गाली गलौज किया और जान से मारने की धमकी दी। प्रार्थी ने बताया कि विपक्षीगण सरहंग किस्म के व्यक्ति हैं और उनके द्वारा चक मार्ग को जोतकर अपने खेत में मिला लिया है, जिसकी पैमाइश कराकर खाली करना अत्यंत आवश्यक है। मामले में उपजिलाधिकारी महराजगंज गौतम सिंह ने बताया कि क्षेत्रीय लेखपाल को मौके की जांच कराकर कार्रवाई के निर्देश दिये हैं।

एसआईआर में उत्कृष्ट कार्य करने पर बीएलओ विवेक सम्मानित

लालगंज (रायबरेली)। विधानसभा 179 हरचंदपुर में चल रहे विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण कार्यक्रम के तहत विकासखंड खीरो के बीएलओ विवेक कुमार ने अपना दायित्व समय से पहले पूरा कर एक मिसाल कायम की है। विवेक कुमार को कुल 937 मतदाताओं की सूची आवंटित की गई थी। इसमें से उन्होंने मौके पर जाकर 900 मतदाताओं का सत्यापन किया। सत्यापन के दौरान 37 मतदाताओं को एएसडी श्रेणी में चिन्हित किया। जिनकी रिपोर्ट समय पर संबंधित अधिकारियों को प्रेषित कर दी गई। गणना प्रपत्रों का वितरण, संकलन और डिजिटाइजेशन कार्य को भी उन्होंने निर्धारित समय सीमा से पूर्व पूरा किया। जिसे प्रशासन ने सराहा है। निर्वाचन से जुड़े कार्यों में त्वरित, सटीक और जिम्मेदाराना रवैया दिखाने पर विवेक कुमार को तहसील स्तर पर सम्मानित किया गया। प्रभारी तहसीलदार शिवम राठौड़ स्वयं बीएलओ के आवास पर पहुंचे और उन्हें पुष्पगुच्छ व शॉल पहनाकर सम्मानित किया। उन्होंने कहा कि निर्वाचन कार्य अत्यंत संवेदनशील होता है और समय पर गुणवत्तापूर्ण काम करने वाले अधिकारियों को प्रोत्साहित किया जाना आवश्यक है।बीएलओ विवेक कुमार की इस उपलब्धि पर उपजिलाधिकारी मिथलेश त्रिपाठी और नायब तहसीलदार ऋतुराज नगर ने भी प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि ऐसे कर्मचारी निर्वाचन व्यवस्था को मजबूत बनाते हैं और आम मतदाता का विश्वास बढ़ाते हैं।

डीएम की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय गौ संरक्षण एवं अनुश्रवण समिति की बैठक सम्पन्न

रायबरेली- जिलाधिकारी हर्षिता माथुर की अध्यक्षता में जनपद स्तरीय गौ संरक्षण एवं अनुश्रवण समिति की बैठक कलेक्ट्रेट सभागार में सम्पन्न हुई। जिलाधिकारी ने सभी गोआश्रय स्थलों की व्यवस्थाओ की ब्लॉकवार समीक्षा की। निर्देश दिया कि समय से सभी व्यवस्थाएं दुरुस्त करा लें। जिलाधिकारी ने कहा कि नवीन गोआश्रय स्थल के निर्माण कार्य समय से करा लें। निर्माण कार्य में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखा जाए। गोआश्रय स्थलों में पशुओं के लिए हरा चारा, पानी,चिकित्सा, प्रकाश,शेड आदि सुनिश्चित कराए। यदि कोई पशु संक्रामित है तो उन्हें अलग कर उचित उपचार कराए। गोआश्रय स्थलों में ठंड के मौसम को देखते हुवे ठंड से बचाव हेतु आवश्यक प्रबन्ध सुनिश्चित कराए। यदि किसी गोवंश की मृत्यु हो जाये तो उचित तरीके से उनका अंतिम संस्कार किया जाए। जिलाधिकारी ने निर्देश दिया कि जिन गोशालाओं में सीसीटीवी कैमरे कार्य नहीं कर रहे है। उन्हें शीघ्र सही करा लें और लगातार उसकी निगरानी भी करते रहे। गोआश्रय स्थलो को स्वालम्बी बनाने के लिए गोशालाओ में वर्मीकम्पोस्ट,गोबर निर्मित काष्ठ,दीपक व पेंट निर्माण की व्यवस्था कराई जाए। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अंजुलता, जिला विकास अधिकारी अरुण कुमार, परियोजना निदेशक डीआरडीए सतीश प्रसाद मिश्रा, मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ0 कुलदीप कुमार द्विवेदी, उप निदेशक कृषि विनोद कुमार सहित संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहें।

तृतीय क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ, मोहनलालगंज टीम जीती

●सांसद अशोक रावत ने श्वेत कपोत उड़ाकर किया उद्घाटन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

भरावन। बीवीएम इंटर कॉलेज ग्राउंड में मंगलवार को तृतीय क्रिकेट टूर्नामेंट का शुभारंभ मुख्य अतिथि सांसद अशोक रावत ने श्वेत कपोत उड़ाकर किया। सांसद व अतिथियों ने दोनों टीमों के खिलाड़ियों से परिचय के बाद सिक्का उछालकर टॉस किया। मोहनलालगंज ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी चुनी। पहले बल्लेबाजी करते हुए अतरौली टीम 59 रन के स्कोर पर ढेर हो गई। जवाब में मोहनलालगंज ने सात ओवर में तीन विकेट खोकर लक्ष्य हासिल कर शानदार जीत दर्ज की। इससे पहले कार्यक्रम के आयोजक कर्नल आदित्य प्रताप सिंह व सांसद अशोक रावत ने बीवीएम इंटर कॉलेज के उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित किया। सांसद ने मेडल पहनाकर व पुस्तक भेंट कर सम्मानित किया। हाईस्कूल वर्ग में अर्चना ने 81% तथा आशुतोष सिंह ने 79% अंक प्राप्त किए। कृषि विज्ञान में शिवानी 77.7%, अनुराधा 74% और विशालिनी 73% अंक के साथ सफल रहीं इंटरमीडिएट कृषि विज्ञान वर्ग में शिखा प्रथम, अनिल द्वितीय और प्रियांशी मौर्या तृतीय रहीं।कला वर्ग में आरती प्रथम, प्रीति द्वितीय तथा शैलेंद्र तृतीय स्थान पर रहे। इसके अलावा आदित्य, गुड़िया,तौहीद ,जोया, रेशम पाल, लकी सिंह, सौरभ मौर्या, रितेश मौर्या सहित कई अन्य प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। इस दौरान ब्लॉक प्रमुख विनोद सिंह तोमर, नरेंद्र बाजपेई, डॉ विभा सिंह, संचित अग्रवाल, आशीष अवस्थी, कुंवर वीरेंद्र सिंह, रामस्वरूप सिंह नेता जी, मंडल अध्यक्ष सूरज चौहान, अरुण सिंह, विनोद सिंह, मोनू सिंह, देवव्रत सिंह, शादाब अली, राजू पांडे, डॉ शैलेंद्र बाजपेई, गुड्डू चौहान, जीतू पांडे, विकास पांडे, शोभित शुक्ल, केपी सिंह, धीरज चौहान, पंकज अवस्थी, महेंद्र सोनी, नंदन बाजपेई, मयंक सिंह, आदित्य पांडे मौजूद रहे।

33 वर्षीय महिला ने फांसी लगाकर की आत्महत्या क्षेत्र में मचा हड़काम

महराजगंज/रायबरेली। कोतवाली के थुलवांसा क्षेत्र के अंतर्गत गुमान सिंह का पुरवा मजरे ओनई जंगल गांव में 33 वर्षीय महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना से क्षेत्र में हड़कंप मच गया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजकर मामले की जांच शुरू कर दी है। आपको बता दें कि, पति पत्नी की आपसी कहासुनी के बाद बीती रात गुमान सिंह का पुरवा मजरे ओनई जंगल निवासी अनीता देवी 33 वर्ष पत्नी नरेंद्र कुमार, निवासी गुमान सिंह का पुरवा मजरे ओनई जंगल ने घर की दूसरी मंजिल पर बने कमरे में फांसी लगा ली। परिजनों को घटना की जानकारी हुई, तो उन्होंने आनन-फानन में अनीता को फंदे से उतारा और तुरंत जिला अस्पताल ले गए। हालांकि,अस्पताल में डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने मृतका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। कोतवाल जगदीश यादव ने बताया कि, शव का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। रिपोर्ट के आधार पर जांच कर कार्यवाही की जाएगी।

जयंती पर याद किए गए लोकबंधु राज नारायण

●सी बी गुप्ता कृषि महाविद्यालय में उनके नाम से बना है छात्रावास

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर 25 नवंबर चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय कैंपस में स्थित लोकबंधु राज नारायण छात्रावास में उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर 109वीं जयंती मनाई गई। महाविद्यालय अध्यक्ष डॉ फिदा हुसैन अंसारी ने बताया कि लोक बंधु जी 'भुक्खड़, फक्कड़ और मस्तमौला' समाजवादी नेता से लेकर विधायक, सांसद व केंद्रीय मंत्री तक का जीवन जिया सदैव सत्य के रास्ते पर चलते थे एक अच्छे राजनेता और समाजसेवी थे। हमने बहुत सारी कहानियां श्रद्धेय बाबू भगवती सिंह जी से लोकबंधु राजनरण की सुनी है। महाविद्यालय के महामंत्री बैजनाथ रावत ने बताया कि लोकबंधु जी इतने निःस्व थे कि उनके बैंक खाते में उनके देहांत के बाद केवल साढ़े चार हजार रूपये थे। कोई आठ सौ एकड़ पुश्तैनी कृषि भूमि का बड़ा हिस्सा उन्होंने दलितों-पिछड़ों को बांट दिया था, क्योंकि वे अपनी विचारधारा के अनुरूप जोतने-बोने वालों को ही कृषि भूमि का मालिक बनाने के पक्ष में थे और खुद को अपनी मान्यताओं का अपवाद बनाना उन्हें गवारा नहीं था। चंद्रभानु गुप्त कृषि महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी एवं छात्रावास अधीक्षक डॉ सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि लोक बंधु जी के नाम से श्रद्धेय बाबू भगवती सिंह जी ने कृषि महाविद्यालय कैंपस में छात्रावास बना रखा है जिसमें उत्तर प्रदेश, बिहार झारखंड नेपाल उत्तराखंड एवं मध्य प्रदेश के 100 से अधिक अंतःवासी छात्र निवास करते हैं। जयंती पर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ योगेंद्र कुमार सिंह, प्रशासनिक अधिकारी शिवमंगल चौरसिया, डॉ हरीश कुमार यादव, डॉ विवेक कुमार वर्मा, डॉ हृदय नारायण तिवारी, डॉ सुधीर रघुवंशी, हॉस्टल केयरटेकर रणजीत सिंह चौहान तथा महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं कर्मचारियो उनकी प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ योगेंद्र कुमार सिंह ने सभी आगंतुकों का धन्यवाद ज्ञापित किया।

नशे में धुत भतीजे ने ताई की दांतों से काटी उंगली, आग सेकने के दौरान हुआ हंगामा रोकने पर किया हमला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के इमलिया सुल्तानपुर थाना क्षेत्र के बेलामऊ गांव में शराब के नशे में धुत एक युवक द्वारा अपनी ताई की उंगली काट डालने का सनसनीखेज मामला सामने आया है घटना रविवार देर शाम की बताई जा रही है, जब गांव निवासी जयदेवी अपने घर के बाहर आग सेक रही थीं। इसी दौरान उनका भतीजा नन्द किशोर, जो नशे की हालत में था वहां पहुंचकर हंगामा करने लगा परिजनों के अनुसार युवक लंबे समय से शराब का आदी है और नशे में आए दिन घर में विवाद खड़े करता रहता है। परिजनों ने बताया कि नशे में धुत नन्द किशोर आग के पास बैठकर बवाल करने लगा ताई जयदेवी ने उसे आग से दूर रहने और घर में हंगामा न करने की नसीहत दी। इसी बात पर युवक आग बबूला हो गया और उनके साथ गाली-गलौज करने लगा जब जयदेवी ने उसे डांटा, तो आरोपी ने अचानक तैश में आकर उनके हाथ को पकड़ लिया और दांतों से जोर से काट लिया। काटने की चोट इतनी गहरी थी कि महिला की एक उंगली अलग हो गई। वारदात के बाद आरोपी युवक घर छोड़कर मौके से फरार हो गया। घटना के बाद परिजनों में हड़कंप मच गया। घायल जयदेवी अपनी कटी उंगली साथ लेकर जिला अस्पताल पहुंचीं चिकित्सकों ने प्राथमिक उपचार के बाद उनकी हालत खतरे से बाहर बताई है और घर भेज दिया है। डॉक्टरों का कहना है कि उंगली पर गंभीर चोट पहुंची है सूचना मिलने के बाद स्थानीय पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और परिजनों से पूछताछ की। हालांकि परिजनों ने अभी तक पुलिस को कोई लिखित शिकायत नहीं दी है!!

दहेज में पाँच लाख की माँग, विवाहिता को पीटकर घर से निकाला, पाँच पर मुकदमा दर्ज

लालगंज (रायबरेली)। कोतवाली क्षेत्र के ऐहार गांव निवासिनी महिला ने ससुरालीजनों पर दहेज उतपीड़न का आरोप लगाया। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने पांच लोगों के विरुद्ध केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी। गांव निवासिनी सभ्या तिवारी ने बताया कि एक मार्च 2023 में उसका विवाह उन्नाव जनपद के मोहिउद्दीनपुर मौरावा में शुभम मिश्रा के साथ हुआ था। उसके पिता ने नगदी समेत पर्याप्त दान दहेज देकर उसे विदा किया। शादी के बाद से ही ससुरारीजन कम दहेज लाने के बात कहकर उसे प्रताड़ित करने लगे। पति ने पांच लाख रुपये दहेज लाने के बाद का कर उसे कमरे में बंद रखा कई दिन खाना नहीं दिया। ससुर नागेंद्र मिश्रा, चचिया ससुर जितेंद्र मिश्रा, सास क्षमता मिश्रा व ऋषभ मिश्रा ने कम दहेज लाने का ताना देकर उसे प्रताड़ित किया। गत 11 अक्टूबर को आरोपियों ने उसके गहने कपड़े छीन कर मारा पीटा और घर से भगा दिया। इंस्पेक्टर प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले में दहेज उत्पीड़न समेत अन्य गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है।

ओया गांव में 35 वर्षीय युवक को ट्यूबवेल पर बदमाशों ने पीट-पीटकर की हत्या

● पूरे क्षेत्र में दहशत पुलिस-प्रशासन में हड़कंप कई टीमें जांच में जुटीं

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज/रायबरेली। चंदापुर थाना क्षेत्र के ओया गांव में बीती रात दिल दहला देने वाली घटना सामने आई है। गांव के 35 वर्षीय युवक विनीत सिंह की उनके ही ट्यूबवेल पर हुई हत्या। ट्यूबवेल पर अचानक अज्ञात हमलावरों ने धावा बोल दिया और कुछ ही मिनटों में पूरे कमरे को क्राइम सीन में बदल दिया ट्यूबवेल के भीतर फैला खून, टूटी वस्तुएं और अस्त-व्यस्त सामान इस बात का साफ संकेत देते हैं कि मृतक की बर्बरतापूर्वक हत्या की गई हैं। घटना से गांव में कोहराम, पुलिस और फॉरेंसिक टीम ने संभाला मोर्चा हत्या की खबर फैलते ही पूरे गांव में चीख-पुकार मच गई। देखते ही देखते ओया गांव पुलिस छावनी में बदल गया सूचना पर चंदापुर थाना पुलिस,फॉरेंसिक टीम,डॉग स्क्वॉड,आस-पास के थानों का पुलिस बल तुरंत मौके पर पहुंचा। फॉरेंसिक विशेषज्ञों ने स्थल का बारीकी से निरीक्षण किया और कई अहम साक्ष्य अपने कब्जे में लिए एएसपी संजीव कुमार सिन्हा रात में ही पहुंचे, जांच के लिए कई टीमें गठित घटना की गंभीरता को देखते हुए अपर पुलिस अधीक्षक (एएसपी) संजीव कुमार सिन्हा देर सुबह ही मौके पर पहुंच गए उन्होंने पुलिस अधिकारियों के साथ बैठक कर कई विशेष टीमें गठित की हैं एएसपी के अनुसार एसओजी टीम व सर्विलांस सेलवस्थानीय पुलिस टीम सब मिलकर घटना की हर दिशा से जांच कर रही हैं। आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज का विश्लेषण किया जा रहा है और क्षेत्र में संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ जारी है एएसपी ने कहा है कि पुलिस जल्द ही अपराधियों को गिरफ्तार कर मामले का खुलासा करेगी गांव में दहशत और आक्रोश इतनी क्रूर हत्या पहले कभी नहीं देखी इस जघन्य हत्या से गांव में भय और आक्रोश दोनों का माहौल है। ग्रामीणों का कहना है कि उन्होंने इतनी बर्बर हत्या पहले कभी नहीं देखी। बहुत से लोगों ने पुलिस से अपराधियों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की है किसी भी अप्रिय स्थिति से बचने के लिए गांव में भारी पुलिस बल तैनात कर दिया गया है क्या हत्या साजिश के तहत की गई? पुलिस की जांच कई एंगलों पर? पुलिस इस हत्या को सोची-समझी साजिश भी मानकर जांच कर रही है। घटनास्थल से मिले साक्ष्यों की फॉरेंसिक रिपोर्ट का इंतजार है हत्या का समय, तरीका और हत्यारों का आत्मविश्वास यह दर्शाता है कि हमलावर मृतक की गतिविधियों से भली-भांति परिचित थे इलाके में चर्चा–आखिर हत्या किसने और क्यों की ओया गांव से लेकर पूरे चंदापुर क्षेत्र में यह हत्या मुख्य चर्चा का विषय बनी हुई है हर कोई एक ही सवाल पूछ रहा है आखिर विनीत सिंह की हत्या किसने और क्यों की बदमाश इतने बेखौफ कैसे पुलिस ने दावा किया है कि बहुत जल्द पूरे मामले का पर्दाफाश कर अपराधियों को बेनकाब किया जाएगा।

गोलीकांड में नया खुलासा महिला को नहीं लगी थी गोली, हिस्ट्रशीटर पर लगा था आरोप

● पुलिस ने आरोपी युवक को किया गिरफ़्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर जनपद सीतापुर के हरगांव थाना क्षेत्र के ग्राम खेदापुर में रविवार को हुए कथित गोलीकांड में बड़ा उलटफेर सामने आया है जिस मामले में हिस्ट्रशीटर प्रदीप सिंह पर महिला को गोली मारने का गंभीर आरोप लगा था, उसकी मेडिकल जांच रिपोर्ट में गोली लगने की पुष्टि नहीं हुई है। जिला अस्पताल के सीएमएस डॉ. इंद्र सिंह ने एक्सरे रिपोर्ट के आधार पर साफ किया कि महिला के पैर में गोली लगने का कोई निशान या बुलेट नहीं पाई गई है। हालांकि महिला का उपचार चल रहा है रविवार को दो पक्षों के आपसी विवाद के दौरान हुई घटना ने गांव में तनाव पैदा कर दिया था। ग्राम खेदापुर में प्रदीप सिंह और पियन सिंह के बीच बाइक से निकलते समय कीचड़ की छींटे पड़ने को लेकर विवाद शुरू हो गया आरोप था कि बहस बढ़ने पर हिस्ट्रशीटर प्रदीप सिंह ने अपने असलहे से फायरिंग कर दी। घटना के दौरान पास खड़ी मंजरी देवी घायल हो गई थीं, जिसके बारे में प्रथम दृष्टया यह आरोप था कि उन्हें दाहिने पैर में गोली लगी है। घटना के बाद पुलिस ने घायल महिला को जिला अस्पताल में भर्ती कराया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद सोमवार को उनका एक्सरे कराया गया रिपोर्ट में गोली लगने की बात सामने न आने के बाद मामले ने नया मोड़ ले लिया है। सीएमएस ने बताया कि महिला के पैर में किसी प्रकार की बुलेट इंजरी नहीं पाई गई है। हालांकि चोट के कारण दर्द और सूजन दर्ज की गई है इधर, विवाद और फायरिंग की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंच गई थी। मामले में नामजद आरोपी प्रदीप सिंह को पुलिस ने सोमवार देर शाम गिरफ्तार कर लिया उसके खिलाफ पहले से भी कई आपराधिक मामले दर्ज बताए जा रहे हैं। वहीं, इस घटना में शामिल दो अन्य नामजद अभियुक्तों की तलाश जारी है एएसपी उत्तरी आलोक सिंह का कहना है कि मेडिकल रिपोर्ट आने के बाद घटना की गहराई से जांच की जा रही है। यदि फायरिंग नहीं हुई थी तो उसकी वास्तविक स्थिति स्पष्ट की जाएगी!!

नगर निगम प्रशासन शिक्षा के केंद्रों को अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित करने का पूरा प्रयास कर रहे हैं -डॉ दिनेश शर्मा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। पूर्वी विधान सभा लखनऊ के अंतर्गत इस्माइलगंज द्वितीय वार्ड में स्थित अटल बिहारी वाजपेई नगर निगम डिग्री कॉलेज में डॉ दिनेश शर्मा मां. सांसद राज्य सभा, पूर्व उपमुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश की सांसद निधि (2025- 26) से एक सभागार/ शैक्षणिक कक्ष का शिलान्यास डॉ दिनेश शर्मा मां. सांसद राज्य सभा, पूर्व उपमुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश के करकमलों द्वारा एवं नगर निगम लखनऊ की महापौर सुषमा खर्कवाल की अध्यक्षता में वैदिक परम्परा अनुसार विधि- विधान से भूमि पूजन कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। इस अवसर पर नगर आयुक्त नगर निगम लखनऊ गौरव कुमार, अपर नगर आयुक्त अरुण कुमार गुप्त की गरिमामयी उपस्थित रही। भूमि पूजन शिलान्यास उपरान्त मुख्य अतिथि डॉ दिनेश शर्मा ने अपने संबोधन में कहा कि वर्तमान नगर निगम प्रशासन शिक्षा के केंद्रों को अत्याधुनिक तकनीक से सुसज्जित करने का पूरा प्रयास कर रही है उसी कड़ी में यह अटल बिहारी वाजपेई नगर निगम डिग्री कॉलेज भी उत्तरोत्तर प्रगति करे यह हमारी जिम्मेदारी है। मैं महाविद्यालय को यह भी आश्वाशन देता हूं कि पुराने भवन के द्वितीय तल पर पांच नए कक्षों के निर्माण करने का प्राविधान अपनी निधि से करूंगा। महापौर सुषमा खर्कवाल ने कहा कि हमारा सतत प्रयास है कि महाविद्यालय के नाम के अनुरूप ही संस्थान प्रगति करे नगर निगम द्वारा इसकी पूरी चिंता की जा रही है उसी का परिणाम है आज एक बहुउद्देशीय सभागार/ शैक्षणिक कक्ष का शिलान्यास किया गया है। आगामी नए सत्र में परास्नातक की कक्षाएं भी संचालित होंगी इसका भी प्रावधान किया जा रहा है।

नगर आयुक्त गौरव कुमार ने सभी का अभिनन्दन करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। अपर नगर आयुक्त अरुण कुमार गुप्त एवं महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ सुभाष चन्द्र पाण्डेय ने आए सभी अतिथियों का महाविद्यालय की ओर से अंगवस्त्र एवं पुष्पगुच्छ प्रदान कर स्वागत किया। शिलान्यास कार्यक्रम में महाविद्यालय सभी शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र -छात्राएं तथा क्षेत्रवासी उपस्थिति रहे।

रेलवे ट्रैक पर मरम्मत कार्य हेतु महमूद नगर से नई बस्ती जाने वाला ट्रैक दो दिन के लिए रहेगा बंद

मलिहाबाद लखनऊ। उत्तर रेलवे के मंडल प्रबंधक कार्यालय द्वारा निर्गत सूचना के अनुसार महमूद नगर रेलवे फाटक संख्या 231/B जो महमूद नगर रोड से लखनऊ हरदोई रोड के संपर्क मार्ग पर स्थित है, जिस पर मरम्मत का कार्य सुनिश्चित किया गया है। जिसके कारण समपार संख्या 231/B महमूद नगर का सड़क यातायात 26 नवम्बर बुधवार सुबह 8 बजे से 28 नवंबर शुक्रवार शाम 6 बजे तक बंद रहने की सूचना उप जिलाधिकारी मलिहाबाद को दी गई है। इस दौरान छोटे व हल्के वाहन इधर से गुजरने वाला यातायात मुजासा रोड से लखनऊ हरदोई रोड के संपर्क मार्ग पर स्थित समपार संख्या 232/C से निकाला जा सकता है। तीन दिन रेलवे क्रासिंग बंद होने के कारण लोगों को आवागमन में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

राजपुरोहित मधुर जी की चेतावनीः हिंदू आस्था पर वार करने वालों को कानून, समाज और सत्य—तीनों का सामना करना पड़ेगा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ आज धर्म ध्वज की विधिवत स्थापना के अवसर पर परिसर वैदिक मंत्रोच्चार और जयघोष से गूंज उठा। वैदिक आचार्यों की उपस्थिति में पुण्याहवाचन, नवग्रह शांति, ध्वज शुद्धि, अभिषेक एवं मंत्रोच्चारित आरोहण की संपूर्ण विधि के साथ धर्म ध्वज स्थापित किया गया। यह ध्वज सनातन संस्कृति, सामाजिक एकता और धर्मरक्षा का सशक्त प्रतीक बनकर फहरा उठा। प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री का आभार

राजपुरोहित मधुर जी ने कहा, 'मैं भारत के माननीय प्रधानमंत्री और प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके नेतृत्व में धर्म, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराओं के संरक्षण को नया बल मिला है। उनकी नीतियाँ धार्मिक आयोजनों को सुरक्षा और सम्मान प्रदान कर रही हैं, जिसके कारण आज ऐसे पवित्र कार्यक्रम और अधिक प्रभावशाली बन पाए हैं।'

सनातन समाज के लिए संदेश- उन्होंने कहा, 'धर्म ध्वज केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि हमारी सभ्यता की आत्मा है। जहाँ धर्म पर प्रहार होगा, वहाँ सनातन समाज पहली पंक्ति में खड़ा मिलेगा। और जहाँ समाज को तोड़ने का षड्यंत्र होगा, वहाँ हमारा प्रतिरोध अडिग और स्पष्ट होगा।'

धर्मविरोधियों को कड़ा संदेश- सभा में उपस्थित साधु-संतों और भक्तों के सामने उन्होंने दोटूक चेतावनी देते हुए कहा, 'जो लोग हिंदू आस्था का अपमान करते हैं, धर्माचार्यों को निशाना बनाते हैं या समाज में विघटन फैलाने का प्रयास करते हैं–वे यह समझ लें कि सनातन की सहनशीलता उसकी उदारता है, कमजोरी नहीं। हिंदू आस्था पर वार करने वालों को कानून, समाज और सत्य–तीनों का कड़ा सामना करना पड़ेगा।'

समूह संकल्प- धर्म ध्वज स्थापना के साथ ही संतों, भक्तों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने संकल्प लिया कि वे धर्म, संस्कृति, बहन-बेटियों की सुरक्षा और राष्ट्र के आध्यात्मिक उत्थान के लिए संगठित होकर निरंतर कार्य करते रहेंगे। शंखध्वनि और जयघोष के बीच पूरा स्थल सनातन ऊर्जा से ओतप्रोत रहा।

पाली गांव में पिकअप वाहन पेड़ से टकराया, एक युवक गंभीर रूप से घायल

महराजगंजः रायबरेली । कोतवाली क्षेत्र के पाली गांव के पास शनिवार सुबह करीब 7 बजे एक पिकअप वाहन सड़क किनारे लगे नीम के पेड़ से टकरा गया। हादसा इतना भीषण था कि वाहन के गेट लॉक हो गए और उसमें सवार लोग अंदर ही फँस गए।स्थानीय ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद वाहन में फँसे लोगों को बाहर निकाला। हादसे में ड्राइवर के बगल की सीट पर बैठे संतराम (18 वर्ष), पुत्र सुरेश कुमार, निवासी–त्रिलोकपुर लोनी कटरा, जनपद बाराबंकी गंभीर रूप से घायल हो गए।घायल संतराम को एंबुलेंस से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र महराजगंज ले जाया गया, जहाँ प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए उन्हें जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया।जानकारी के अनुसार पिकअप वाहन हैदरगढ़ की ओर से टेंट का सामान लेकर एक शादी समारोह में जा रहा था, तभी यह दुर्घटना पाली गांव के पास हुई।

लखनऊः तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर ट्रक में घुसी, एक की मौत और साथी घायल

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। गोसाईगंज में आरआए अस्पताल के पास मंगलवार तड़के तेज रफ्तार कार ट्रक में जा घुसी। हादसे में कार सवार 26 वर्षीय अब्दुल सईद की मौके पर मौत हो गई। वहीं, साथी का ट्रामा सेंटर में इलाज चल रहा है। उधर, सुशांत गोल्फ सिटी में सड़क हादसे में घायल हुए 53 वर्षीय सजीवन पाल ने इलाज के दौरान मौत हो गई।

इंस्पेक्टर गोसाईगंज ब्रजेश कुमार तिवारी ने बताया कि मृतक अब्दुल सईद मूल रूप से बाराबंकी के लोनी कटरा स्थित सराय पांडे गांव के रहने वाले थे। उन्होंने बताया कि आरएस अस्पताल के पास शादी समारोह से लौट रही एक कार आगे जा रहे ट्रक में पीछे से जा घुसी। इस हादसे में कार में सवार दो लोग बुरी तरह फंस गए। कड़ी मशक्कत के बाद दोनों को बाहर निकाला, लेकिन तब तक ड्राइविंग सीट के बगल में बैठे अब्दुल सईद की मौके पर ही मौत हो चुकी थी।

पिता अब्दुल हमीद ने बताया कि गांव में अश्वनी पांडे के बेटे की शादी गोसाईगंज स्थित कबीरपुर मैरिज लान में थी, जिसमें शामिल होने के लिए वह गांव के ही युवक विकास की स्विफ्ट डिजायर कार से गया था। रात को लौटते समय कार अनियंत्रित होकर ट्रक में जा घुसी। हादसे में गंभीर रूप से घायल ड्राइवर विकास को सीएचसी गोसाईगंज पहुंचाया गया, जहां से उसे बलरामपुर अस्पताल रेफर किया गया। उसकी हालत अभी भी गंभीर बनी हुई है।

सड़क हादसे में घायल बुजुर्ग ने तोड़ा दम

सुशांत गोल्फ सिटी थाना क्षेत्र में स्थित किसान पथ पर पांच नवंबर को हुए एक्सीडेंट में घायल दूधिए राम सजीवन पाल ने मंगलवार सुबह इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। इंस्पेक्टर उपेन्द्र सिंह ने बताया कि राम सजीवन दूध सप्लाई का काम करते थे। दूध बांटकर लौटते समय किसी अज्ञात वाहन ने पीछे से जोरदार टक्कर मार दी थी, जिसमें वे गंभीर रूप से घायल हो गए थे। सजीवन के परिवार में पत्नी, बेटा अर्पित और एक बेटी है।

संक्षिप्त खबरें

मनिहारी का काम करने वाले बन बैठे पत्रकार , कर रहे हप्ता वसूली

शहडोल- प्रदेश भर में पत्रकारों का उमड़ी भीड़ किसी को नुकसान तो किसी को लाभ , आप को बता दे कि इन दिनों पत्रकार जो अपने लिए नहीं बल्कि जनता के मुद्दों को सरकार तक पहुँचने का काम करती हैं क्योंकि हर आम व्यक्ति अपनी बातों को सरकार तक पहुँचाने में योग्य नहीं हैं इसलिए देश के चौथे स्तंभ कहे जाने वाले कि सरकार तक हर व्यक्ति विशेष की उपलब्धि हासिल करने में अहम भूमिका निभाती हैं। लेकिन ठीक इसके उल्टा शहडोल में देखा जा सकता हैं, इन दिनों धनपुरी में उमड़े फर्जी पत्रकारों को पत्रकारिता के नाम पर वसूली पर उतर आए हैं। आपको बता दे पहले आशीष कचेर नामक व्यक्ति मनिहारी का काम करने वाला व्यक्ति इन दिनों फर्जी पत्रकार बन वसूली में लग गया । प्राप्त जानकारी के अनुसार आशीष दैनिक बढ़ता विज्ञान के नाम पर लोगों को डरा धमकाकर झूटी खबरों के नाम पर लोगों से पैसे का डिमांड करता हैं और अगर किसी ने पैसे देने से इनकार किया तो झूटी खबर चलाकर छुटी वसूली करता हैं। अगर ये शिलशिला ऐसे ही चलता रहा तो पत्रकार जगत का कुछ अलग ही देखने को मिलेगा।

अज्ञात कारणों के चलते युवक ने लगाई फांसी, मौत

हमीरपुर। अज्ञात कारणों के चलते युवक ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मौदहा कोतवाली क्षेत्र के ग्राम सिजवाही निवासी गनेश (35)पुत्र महेश ने मंगलवार को फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली, घटना की सूचना से पूरे मोहल्ले में हडकंप मच गया सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचायत नामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आगे की कार्यवाही शुरू कर दी है। मृतक खेतिहर मजदूरी करने का काम करता था और शराब का आदी बताया जा रहा है। जबकि मृतक अपने पीछे एक पत्नी सहित एक मासूम बच्चे को रोता बिलखता छोड़ गया है। हालांकि युवक द्वारा आत्महत्या करने के कारणों की जानकारी नहीं हो सकी है। इस सम्बन्ध में कोतवाली प्रभारी संतोष सिंह से लगातार दूरभाष पर जानकारी चाही गई लेकिन उनसे सम्पर्क नहीं हो सका।

खाद की दुकानों का निरीक्षण, एक जगह अनियमितता का आरोप

हमीरपुर- जिले में खाद की ओवररेटिंग की शिकायतों के बाद प्रशासन सक्रिय हो गया है। जिलाधिकारी घनश्याम मीणा के आदेश पर सोमवार को एडीएम न्यायिक रिजवाना शाहिद की अगुवाई में जिला कृषि अधिकारी और उनकी टीम ने कुरारा कस्बे में स्थित कई उर्वरक केंद्रों का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान गौरीशंकर उर्वरक केंद्र में गंभीर अनियमितताएं पाई गईं। दुकान के स्टॉक का मिलान सही नहीं मिला और रिकॉर्ड में कई विसंगतियाँ सामने आईं। टीम ने इस लापरवाही पर नाराजगी जताई और एडीएम न्यायिक ने जिला कृषि अधिकारी को उक्त दुकान के खिलाफ आवश्यक कार्रवाई करने के निर्देश दिए।

इसके विपरीत, हम्मीरदेव फार्मर उर्वरक केंद्र में सब कुछ सही पाया गया। टीम ने किसानों से पूछताछ की, जिसमें किसी भी प्रकार की ओवररेटिंग या अनियमितता की शिकायत नहीं मिली। जांच टीम ने स्पष्ट चेतावनी दी है कि यदि कोई उर्वरक विक्रेता खाद की बिक्री में अनियमितता या अधिक दाम वसूलते हुए पाया गया, तो उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन के इस कदम से किसानों में राहत और दुकानदारों में सतर्कता देखी जा रही है।

ज्ञानपुर में राज्य महिला आयोग की सदस्य आज करेंगी जनसुनवाई

भदोही। उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य नीलम प्रभात 26 नवंबर को पूर्वाह्न 11 बजे से राजकीय अतिथि गृह, ज्ञानपुर में महिला जनसुनवाई करेंगी। जिला प्रोबेशन अधिकारी शत्रुघ्न कन्नौजिया ने बताया कि घरेलू हिंसा, दहेज उत्पीड़न, यातना या किसी भी प्रकार के उत्पीड़न से पीड़ित महिलाएं व बालिकाएं अपने मामलों के निस्तारण हेतु जनसुनवाई में उपस्थित होकर शिकायत दर्ज करा सकती हैं।

श्रीभूमी जिले के दुल्लभछड़ा में लगातार विकास की प्रक्रिया में पूर्व एडीसी निलमणि दास का आतिशबाजी और ढोल-नगाड़ों के साथ शाही स्वागत किया गया

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

स्वतंत्र प्रभातः श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा के निवासी होने के बावजूद सरकारी नौकरी की आवश्यकता के कारण दुल्लभछड़ा के बाहर रहते थे। लेकिन 2015 ई. में एडीसी पद से सेवानिवृत्त होने के बाद दुल्लभछड़ा क्षेत्र के जीर्ण-शीर्ण डाकघर, रेलवे संपर्क व्यवस्था और क्क्ष्क्र शाखा के ग्राहकों की परेशानियों के बारे में जनता के अवगत होने पर उन्होंने अपनी कर्मठता और 'एकला चलो रे' आत्मविश्वास के साथ रेलवे और जीर्ण-शीर्ण डाकघर का अस्थायी समाधान किया। हालांकि 2016 ई. में दुल्लभछड़ा के स्थानीय सतर्क नागरिकों द्वारा एसबीआई शाखा स्थापित करने के उद्देश्य से विभागीय अधिकारियों को स्मारक पत्र प्रदान किया गया था। लेकिन जनता की मांग को अनदेखा कर दिया गया। इस बारे में सेवानिवृत्त एडीसी निलमणी दास ने जनता की सुविधा के लिए एसबीआई बैंक स्थापना के संबंध में रामकृष्णनगर-शीलचर-गुवाहाटी-मुंबई के अधिकारियों के साथ विचार-विमर्श किया और क्षेत्र की जनसंख्या, संचार व्यवस्था तथा भौगोलिक स्थिति पर प्रकाश डाला। उनके अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप एसबीआई विभाग की ओर से दुल्लभछड़ में शाखा स्थापित करने की अनुमति पत्र प्रदान किया। हालांकि, गत 24 नवंबर (सोमवार) को दुल्लभछड़ में उनके आने की खबर पर स्थानीय जागरूक नागरिक दुल्लभछड़ रेलवे स्टेशन पर इकट्ठा हुए और आतिशबाज़ी के साथ ढोल नगाड़े बजाकर राजसी स्वागत करते हुए उन्हें घर ले गए। अंत में उनके घर में एक अस्थायी सभा के माध्यम से दुल्लभछड़ा के विकास में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए कृतज्ञता व्यक्त की। दूसरी ओर, पत्रकारों के सवालों के जवाब में उन्होंने कहा कि इस लंबे समय की कोशिश में स्थानीय नागरिकों के उत्साह के कारण ही वे आगे बढ़ पाए। उन्होंने यह भी बताया कि दुल्लभछड़ा-निविया-चेरेगी-रंगपुर क्षेत्र के लोगों की सुविधा के लिए सर्कल ऑफिस, पुलिस स्टेशन, एफसीआई गोदाम, एक कॉलेज की अत्यंत आवश्यकता है और इस पर विचार कर रहे हैं। साथ ही उन्होंने इसके लिए जनता के सहयोग और शुभकामनाएं मांगी। सम्मान देने के लिए उपस्थित थे सेवानिवृत्त शिक्षक विष्णुपद राजवंशी, माणिक लाल विश्वास, रवींद्र सिन्हा, अतुल सिन्हा, व्यास सिन्हा, श्यामल भट्टाचार्य, बार्ग्य सिंह, मानाथंभा सिंह, सुखमणी सिन्हा, प्रकाश चाटार्जी, बानु पाल, कमला कान्त सिन्हा, रुनु सिन्हा, माधव दे, समरेन्द्र सिन्हा, निर्मल सिन्हा, मणिलाल साहू सहित क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्तित्व और गणमान्य लोग।

पूर्व सचिव पर वित्तीय अनियमितता का आरोप, जांच अधिकारी बदलने की मांग

हमीरपुर- मुस्करा विकासखण्ड के गहरौली स्थित बी-पैक्स (साधन सहकारी समिति) में वित्तीय अनियमितताओं का मामला सामने आया है। समिति की अध्यक्ष राजकुमारी विश्वकर्मा ने पूर्व सचिव रईस मुहम्मद पर घोटाले और नए सचिव को पूरा चार्ज न देने का आरोप लगाया है। इस संबंध में उन्होंने सहायक आयुक्त एवं सहायक निबंधक सहकारी समिति, हमीरपुर को एक पत्र भेजकर विस्तृत शिकायत की है। अध्यक्ष ने बताया कि मामले की जांच के लिए बृजमोहन पटेल, सहायक विकास अधिकारी, मुस्करा को नियुक्त किया गया है, लेकिन उनके जांच अधिकारी होने पर आपत्ति जताई है। उनका कहना है कि बृजमोहन पटेल पूर्व सचिव रईस मुहम्मद की कार्यप्रणाली से परिचित हैं, जिससे जांच की निष्पक्षता संदिग्ध हो सकती है। राजकुमारी विश्वकर्मा ने मांग की है कि वर्तमान जांच अधिकारी को हटाकर हाल ही में नियुक्त अपर जिला सहकारी अधिकारी को जांच का दायित्व सौंपा जाए। उनका तर्क है कि नए अधिकारी किसी भी पक्ष से परिचित नहीं हैं, जिससे समिति में हुए कथित वित्तीय घोटाले का निष्पक्ष और पारदर्शी खुलासा सुनिश्चित हो सकेगा।

पीएम आवास योजना शहरी में मची लूट

● फाईलें न मिलने से लाभार्थी तहसील की कर रहे परिक्रमा, नहीं मिल रही जानकारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा गरीब शहरियों के उत्थान के लिए चलाई जा रही प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना मौदहा में भ्रष्टाचार की भेंट चढ गई है। आठ से नौ महीने बीतने के बाद भी फाईलों की स्टेटस रिपोर्ट के आधार पर लाभार्थी तहसील कार्यालय की परिक्रमा करने को मजबूर हैं लेकिन कर्मचारी किसी को भी फाईलों की वास्तविक स्थिति बताने को तैयार नहीं हैं। वहीं दलालो के माध्यम से जानकारी आसानी से मिल जाती है। देश के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की गरीबों को छत देने के उद्देश्य से चलाई जा रही महत्वाकांक्षी योजना प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना के लिए बीते साल के अंत में आवेदन मांगे गए थे जिनमे से कुछ लाभार्थियों के आवेदनों की जांच की जा चुकी है और कुछ की जांच लम्बित है। जबकि स्टेटस रिपोर्ट में अधिकांश आवेदन नगरपालिका में होना दर्शाया जा रहा है जिसके आधार पर पक्के घर की आस लिए लाभार्थी तहसील और नगरपालिका की परिक्रमा करने को मजबूर हैं लेकिन कुर्सियों में बैठे जिम्मेदार लाभार्थियों को कुछ बताने के बजाय सीधे मुंह बात करने को भी तैयार नहीं हैं।हालांकि इस सम्बन्ध में लाभार्थियों द्वारा सम्पूर्ण समाधान दिवस पर भी शिकायतें दर्ज कराई जाती रही हैं लेकिन शिकायतों का निस्तारण नहीं होने के चलते आमजन का सम्पूर्ण समाधान दिवस जैसे आयोजनो से विश्वास उठता जा रहा है। कस्बे के दुर्गा सिंह ने तहसील की महिला कर्मचारी की मिलीभगत से मीरा तालाब में माया और मीना को अपात्र होने के बाद भी शुभलाभ के चलते पात्र कराने की शिकायत दर्ज कराई है जबकि नगरपालिका के कुछ सभासदों द्वारा भी शुभलाभ का खेल खेलते हुए अपात्रों और नये बने पक्के मकान वालों को भी पात्र कराने का काम किया जा रहा है। जिसपर लगाम लगाई जाना आवश्यक है।

तेज रफ्तार कार ने स्कूटी सवार दम्पत्ति को मारी टक्कर, पत्नी की मौत, पति गंभीर

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- मंगलवार सुबह नेशनल हाईवे 34 पर एक फोरव्हीलर ने स्कूटी सवार दम्पत्ति को टक्कर मार दी।अमरूद बेचकर गांव वापस जा रहे स्कूटी सवार दंपती को यूपी 32एल. एन. 2334नम्बर की कार ने टक्कर मार दी। जिससे पत्नी की मौके पर ही मौत हो गई,जबकि पति को गंभीर हालत में सदर अस्पताल रेफर कर दिया है। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और जांच पड़ताल शुरू कर दी है।जबकि कार चालक को पुलिस ने हिरासत में ले लिया है।

कोतवाली क्षेत्र के मदारपुर निवासी कदीरा बाबा अपनी पत्नी सहाना उम्र (45) वर्ष के साथ स्कूटी से मौदहा मण्डी से अमरूद बेचकर में गांव जा रहा था। तभी महोबा की ओर से आ रही तेज रफ्तार कार ने सामने से जोरदार टक्कर मार दी। जिससे दंपति बाइक सहित सड़क किनारे खंती में गिर गये। जिसे आनन फानन में एम्बुलेंस व राहगीरों की मदद से कस्बे के सरकारी अस्पताल पहुंचाया गया, जहां पत्नी सहाना को डाक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। जबकि पति कदीरा को प्राथमिक उपचार के बाद हालत गंभीर होने के चलते सदर अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया है। मिली जानकारी अनुसार दंपति मौदहा से अमरूद बेचकर गांव अपने घर वापस लौट रहे थे तभी नेशनल हाईवे 34पर नरायच के नजदीक स्थित हड्डी फैक्ट्री के पास दुर्घटना हो गई। दंपत्ति ट्रैक्टर मे आटा चक्की पीसने का भी काम करते हैं। इस दर्दनाक घटना से परिजनों सहित गांव में कोहराम मचा है। मृतका अपने पीछे तीन पुत्र और तीन पुत्रियों को रोता बिलखता छोड़ गई है।इस सम्बन्ध में कोतवाली प्रभारी संतोष सिंह ने बताया कि शव का पंचायत नामा भरकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है और कार चालक लखनऊ निवासी अर्जुन वर्मा को हिरासत में ले लिया गया है और आगे की कार्यवाही की जा रही है।

धान के खेत में पहुँचा 7 फीट का मगरमच्छ, ग्रामीणों में मचा हड़कंप

वन विभाग की टीम ने सुरक्षित पकड़ कर ददरी बाध जलाशय में छोड़ा

हलिया, मिर्जापुर। हलिया वन रेंज के बरी गाँव में मंगलवार की सुबह किसान के धान के कटे हुए फसल के खेत में बोझा बांधने गये लोगों ने करीब 7 फीट लंबा मगरमच्छ को देखते ही ग्रामीणों में हड़कंप मच गया।ग्रामीणों ने इसकी सूचना वन विभाग को दी।सूचना पर वन विभाग के क्षेत्राधिकारी अवध नारायण मिश्रा ने वनकर्मी शनि सिंह, नीतू शर्मा, राजकुमार, वन रक्षक शिवम सिंह को मौके पर भेजा वन विभाग की टीम ने मगरमच्छ को कड़ी मशक्कत के बाद जूट के बोरे को आंख पर बांध कर सुरक्षित पकड़ते हुए मगरमच्छ को वाहन से लेजाकर ददरी बांध के गहरे जलाशय में छोड़ दिया । मगरमच्छ के पकड़े जाने के बाद ग्रामीणों ने राहत की सांस ली।इस संबंध में वन क्षेत्राधिकारी अवध नारायण मिश्रा ने बताया कि खेत में निकले मगरमच्छ की सूचना वन विभाग की टीम मौके पर पहुँच कर सुरक्षित पकड़कर जलाशय में छोड़ दिया है।इस दौरान वन विभाग के कर्मीयो सहित बड़ी संख्या में ग्रामीण मौजूद रहे।

सफदरजंग अस्पताल में पहली बार सफल बाल चिकित्सा किडनी प्रत्यारोपण, केंद्रीय सरकारी अस्पतालों में भी पहला मामला

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्ली। वर्धमान महावीर मेडिकल कॉलेज (VMMC) और सफदरजंग अस्पताल ने अपने रीनल ट्रांसप्लांट कार्यक्रम में एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। 19 नवंबर 2025 को अस्पताल में सफलतापूर्वक बाल चिकित्सा किडनी प्रत्यारोपण (Paediatric Renal Transplant) किया गया। अस्पताल के निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने बताया कि यह न सिर्फ सफदरजंग अस्पताल में पहली बार हुआ है, बल्कि किसी भी केंद्रीय सरकारी अस्पताल में किया गया पहला बाल चिकित्सा किडनी प्रत्यारोपण है सर्जिकल टीम का नेतृत्व यूरोलॉजी और रीनल ट्रांसप्लांट विभाग के निदेशक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. पवन वासुदेवा ने किया, जिनके साथ डॉ. नीरज कुमार प्रोफेसर, यूरोलॉजी शामिल रहे। बाल चिकित्सा टीम का नेतृत्व बाल गुर्दा रोग विभाग की निदेशक प्रोफेसर एवं इंचार्ज डॉ.श्रीमती शोभा शर्मा ने किया। टीम में डॉ. श्रीनिवासवरदन (असिस्टेंट प्रोफेसर) और प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष बाल रोग विभाग के डॉ. प्रदीप के देबता के मार्गदर्शन में विशेषज्ञ शामिल थे। एनेस्थीसिया टीम का नेतृत्व डॉ. सुशील ने किया, टीम में डॉ. ममता और डॉ. सोनाली शामिल रहीं, यह सभी एनेस्थीसिया विभाग की निदेशक प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. कविता रानी शर्मा के मार्गदर्शन में कार्यरत थे मरीज 11 वर्षीय बालक था, जिसे 'बाइलेटरल हाइपोडिस्प्लास्टिक किडनी' नामक दुर्लभ बीमारी के कारण अंतिम चरण की किडनी विफलता हो गई थी। डॉ. शोभा शर्मा ने बताया कि लगभग डेढ़ साल पहले बच्चा बेहद गंभीर हालत में अस्पताल लाया गया था और उसे कार्डियक अरेस्ट के बाद पुनर्जीवित करना पड़ा। उसी समय किडनी फेल होने का पता चला और तब से बच्चा बाल नेफ्रोलॉजी विभाग की देखरेख में नियमित डायलिसिस पर था।डॉ. पवन वासुदेवा ने बताया कि बाल चिकित्सा किडनी प्रत्यारोपण अत्यंत जटिल सर्जरी होती है, क्योंकि इसमें दाता की किडनी को बच्चे की बड़ी रक्त वाहिकाओं से जोड़ना और उसके शरीर में वयस्क किडनी के लिए पर्याप्त स्थान बनाना चुनौतीपूर्ण होता है। इस मामले में दाता बच्चे की 35 वर्षीय माता थीं।

उन्होंने संतोष व्यक्त किया कि प्रत्यारोपित किडनी ने ठीक प्रकार से कार्य करना शुरू कर दिया है, बच्चा डायलिसिस से मुक्त हो चुका है और उसकी स्थिति सामान्य है तथा वह शीघ्र ही अस्पताल से छुट्टी पा लेगा। उन्होंने निदेशक डॉ. संदीप बंसल, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चारु बंबा और प्राचार्य डॉ. गीतिका खन्ना के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया।

निदेशक डॉ. संदीप बंसल ने कहा कि सफदरजंग अस्पताल सभी नागरिकों को उच्च गुणवत्ता वाली चिकित्सा सेवाएँ निःशुल्क उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि सुल्तानपुर (उत्तर प्रदेश) से आने वाले इस बच्चे के परिवार ने आर्थिक तंगी के कारण आशा खो दी थी, क्योंकि निजी क्षेत्र में ऐसा ऑपरेशन लगभग 15 लाख रुपये का होता। उन्होंने यह प्रसन्नता जताई कि बच्चा अब स्वस्थ है और नए जीवन की शुरुआत कर रहा है। चिकित्सा अधीक्षक डॉ. चारु बंबा ने बताया कि प्रत्यारोपण के बाद जीवनभर उपयोग होने वाली महंगी 'इम्यूनोसप्रेसिव दवाएं' भी अस्पताल की ओर से बच्चे को निःशुल्क उपलब्ध कराई जाएंगी।यह उपलब्धि न केवल सफदरजंग अस्पताल की चिकित्सा क्षमता का प्रमाण है, बल्कि उन परिवारों के लिए भी उम्मीद की किरण है जो आर्थिक तंगी के चलते जटिल चिकित्सा प्रक्रियाओं का लाभ नहीं उठा पाते।

अलग-अलग दो स्थानों से चोरों में उड़ाया लाखों का माल

● अतरार से, चोर चुरा ले गए बीस हजार नगदी और डेढ़ लाख के जेवरात, मसगांव में शादी के तैयारियों पर लगा ग्रहण- दुल्हन का जेवर व सामान चोरी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- बिवांर थाना क्षेत्र के अतरार गांव की वृद्धा रामबाई पत्नी सैयद्दीन ने बिवांर थाना में गांव के ही एक युवक के खिलाफ चोरी की तहरीर दी है।वृद्धा ने बताया कि बीते सोमवार की रात वह अपनी बड़ी और छोटी बहू व नाती शिवम के साथ दैनिक दिनचर्या के बाद सो गए।बताया कि रात लगभग तीन बजे आवाजें सुनकर उसकी छोटी बहू रोशनी जागी ,जिसने दो लोगों को भागते हुए देखा।वृद्धा के अनुसार उन्होंने रात में ही 112 नबंर फोन किया जिसपर पुलिस आई और आसपास तलाश करती रही।बताया कि उसका बक्सा गांव के सेवादास के घर में मिला जिसके घर मे भी चोरों ने चोरी करने की कोशिश की थी।बक्सा खुला पड़ा मिला जिसके कपड़े बिखरे पड़े थे और लगभग डेढ़ लाख के जेवर और बीस हजार रुपये नहीं मिले।

पीड़िता ने बताया कि सुबह के वख्त घर के मुख्य द्वार की कुंडी को तोड़ने में प्रयोग किये गए दो सरिया और हंसिया पड़ा मिला ,पता करने पर वह गांव के बबलू पुत्र जगमोहन का निकला।वृद्धा ने बताया कि उसने बबलू के खिलाफ चोरी करने की तहरीर दी है ,लेकिन पुलिस अज्ञात के खिलाफ तहरीर देने को कह रही है।

वहीं थाना प्रभारी नन्दराम चोरी मानने को तैयार नहीं हैं ,उनका कहना था कि घटना की जांच की जा रही है चोरी की पुष्टि होने पर ही कार्यवाही की जाएगी। वहीं दूसरी घटना में मुस्करा थाना क्षेत्र के मसगांव गांव में बीती रात अज्ञात चोरों ने एक शादी वाले घर को निशाना बनाते हुए हजारों रुपये के जेवरात, नगदी और कीमती सामान पर हाथ साफ कर दिया। पीड़ित बदी प्रसाद की बेटी का विवाह आज 25 नवंबर को मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह सम्मेलन, राठ में होना था।

तहरीर के अनुसार परिवार रात में आंगन में सो रहा था, तभी 24/25 नवंबर की रात चोरों ने घर की पिछली कच्ची दीवार तोड़कर अंदर प्रवेश किया और कमरे में रखे बक्से का ताला तोड़ दिया। सुबह जागने पर परिजनों ने टूटे हुए बक्से, बिखरे कपड़ों और पीछे खेतों में पड़े खाली जेवर डिब्बों व टूटे सूटकेस को देखा तो घर में चोरी की पुष्टि हुई।

सूचना पर थाना मुस्करा पुलिस मौके पर पहुंची। जांच में घर गांव से लगभग 500 मीटर दूर होने और दीवारें कच्ची होने की जानकारी सामने आई। पुलिस को मौके से लगभग 6000 नगद भी बरामद हुए हैं। मौके पर फील्ड यूनिट और सर्विलांस टीम साक्ष्य जुटाने में लगी है, साथ ही आसपास के छ्ष्ट्रञ्जङ्क कैमरों की फुटेज भी खंगाली जा रही है। वादिनी की तहरीर पर थाना मुस्करा पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर आवश्यक विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

मानवाधिकार सुरक्षा संगठन ने खण्ड शिक्षा अधिकारी को स्कूल पुनः संचालन के लिए सौंपा ज्ञापन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- मानवाधिकार सुरक्षा एवं अपराध निरोधक संगठन की हमीरपुर जिला इकाई ने मौदहा नगर छिमौली रोड स्थित माननीय कांशीराम जूनियर हाईस्कूल के पुनः संचालन के लिए जिलाध्यक्ष सैय्यद शहबाज अली के नेतृत्व में मौदहा खंड शिक्षा अधिकारी को स्कूल संचालन किए ज्ञापन सौंपा। इसमें उन्होंने बताया कि यह विद्यालय उनके संगठन के लगातार पिछले पांच वर्षो तक संघर्ष के बाद संचालित हुआ था परन्तु विभागीय अनदेखी एवं कुछ समस्याओं के कारण स्कूल पुनः बंद कर दिया गया है।

और सभी आठ कक्षाओं का पठन पाठन समेट कर केवल एक ही कमरे में सीमित कर देने से शिक्षण कार्य बुरी तरह तो प्रभावित हो रहा इसके साथ ही बच्चों के स्वास्थ्य एवं उनके व्यक्तित्व विकास में भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है जिसके संबंध में कई बार संगठन ने प्रशासन को प्रार्थना पत्र दिए लेकिन नतीजा शून्य ही रहा है,इसी आक्रोश में संगठन ने खण्ड शिक्षा अधिकारी को ज्ञापन देते हुए शीघ्र ही विद्यालय संचालन के लिए आग्रह किया है और संचालन न होने पर जमीनी स्तर पर आंदोलन की चेतावनी भी दी इस पर खंड शिक्षा अधिकारी सुशील कमल जी ने शीघ्र ही विद्यालय संचालन का आश्वासन दिया है। इस मौके पर संगठन के जिलाउपाध्यक्ष कलीम अहमद,जिला महासचिव आसिफ शकील, एड शाहरुख फरीद, जिलाध्यक्ष (युवा मोर्चा) डॉ सत्यहरी, नगर मीडिया प्रभारी दानिश साबरी, नगर अध्यक्ष सुमित वर्मा, आतिफ चौधरी, धनंजय गौतम, आशीष शिवहरे, कमल किशोर, जगरूप, वसीम कमाल आदि दर्जनों लोग मौजूद रहे।

महिला से फोन पर अभद्रता, मामला दर्ज

गोपीगंज। थाना क्षेत्र की एक महिला ने पुलिस को तहरीर देकर आरोप लगाया कि दिनांक 22.11.2025 को सुबह 10:42 बजे किसी अज्ञात व्यक्ति ने उसके मोबाइल पर फोन किया। कॉल करने वाले व्यक्ति ने उसे राजपूत ढाबा पर आने को कहा और फोन पर अशोभनीय एवं अभद्र बातें करने लगा। पीड़िता के मना करने पर आरोपी ने धमकी देते हुए फोन काट दिया। महिला की शिकायत पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है तथा आवश्यक कार्रवाई में जुट गई है।

समर्थ इंडिया का महिलाओं से हिंसा के विरुद्ध तरंग मेरे सपने मेरी उड़ान 'का 16 दिवसीय कार्यक्रम शुरू

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- कुरारा विकासखण्ड क्षेत्र के कंडोर गांव में महिलाओं और लड़कियों पर होने वाली हिंसा के विरुद्ध समर्थ इंडिया संस्था का 16 दिवसीय जन जागरूकता अभियान शुरू हुआ ,जो 0डिजिटल हिंसा और अधिकार पर 25 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलेगा। समर्थ इण्डिया द्वारा तरंग मेरे सपने मेरी उड़ान के तहत महिला और लड़कियों पर होने वाली को हिंसा के विरुद्ध 16 दिवसीय अभियान द्वारा शुरू किया गया है। 25 नवंबर से 10 दिसंबर तक लगातार चलने वाले जन जागरूकता अभियान में नुक्कड़ नाटक, सामुदायिक बैठक, दीवार लेखन, और सूचना संचार सामग्री के माध्यम से डिजिटल हिंसा और अधिकार पर समुदाय को जागरूक किया जा रहा है।

क्षेत्र के ग्राम कंडोर में जन जागरूकता में समर्थ इंडिया की राखी सिंह ने कहा कि डिजिटल हिंसा की रोकथाम जरूरी है। महिला और लड़कियों के बीच डिजिटल डिवाइस का उपयोग का अधिकार है। किंतु अवांछित कॉल और अनचाहे कमेंट हिंसा बढ़ाते हैं। उन्होंने कहा कि सभी को जागरूक होना होगा और इसकी रोकथाम के लिए आगे होना।

समर्थ इण्डिया की कुमकुम ने बताया कि महिला और लड़कियों के ऊपर किसी भी प्रकार की डिजिटल हिंसा नहीं होनी चाहिए। सोशल मीडिया के उपयोग समझदारी से करें। अपने पासवर्ड को सुरक्षित बनाएं। प्राइवेसी और ब्लॉक रिपोर्ट करने वाले ऑप्शन का भी समय-समय पर जरूरत आनुसार उपयोग करें। इस दौरान सुनैना, प्रीति, रूबी, राधा, सहित दो दर्जन से अधिक महिलाओं, लड़कियों ने भाग लिया। साथ ही जागरूकता रैली भी निकाल कर लोगों को जागरूक किया। ग्राम कुतुबपुर गांव में मेहंदी रचाओ प्रतियोगिता के माध्यम से डिजिटल डिवाइस के उपयोग और अधिकार पर चर्चा हुई। जिसमें सिमरन, माधुरी, मोहिनी, एकता, आदित्या, साक्षी, आदि ने प्रमुख रूप से प्रतिभाग किया।

अलकछुआ ने हैदरगंज को 16 रनों से हराया

● दूसरे मुकाबले में स्टार वाइस ने यूथ ब्रिगेड को दी करारी शिकस्त

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

हमीरपुर- मौदहा कस्बा में चल रहे मौलाना सलीम मेमोरियल अखिल भारतीय खेल महोत्सव के टेनिस बॉल क्रिकेट टूर्नामेंट में मंगलवार को तीसरे दिन का पहला मुकाबला हैदरगंज किंग्स और अलकछुआ के बीच 15-15 ओवरों का खेला गया , जिसमें अलकछुआ ने पहले टॉस जीतकर बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 15 ओवर में 7 विकेट खोकर कुल 138 रन बनाए। नीरज ने 36 गेंदों पर 58 रनों की आतिशी पारी खेली। वहीं स्कोर को पाने को उतरी हैदरगंज किंग्स 13 ओवर में मात्र 122 रनों पर सिमट गई जिसमें अलकछुआ ने 16 रनों से मुकाबला जीत लिया।अलकछुआ की ओर से 58 रनों की धुआंधार पारी खेलने वाले नीरज को मैन ऑफ द मैच दिया गया।दूसरा मुकाबला स्टार वाइस और यूथ ब्रिगेड के बीच खेला गया। जिसमे यूथ ब्रिगेड ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित ओवरों कुल 101 रनों पर सिमट गई लेकिन स्टार वॉइस ने106 रन बनाकर 6 विकेट से मुकाबला जीत लिया। यूथ ब्रिगेड की ओर से सबसे ज्यादा 41 रन सनी भुट्टो ने बनाए जबकि स्टार वाइस की ओर से 54 रनों की अर्धशतकीय पारी खेलने वाले मोहित को मैन ऑफ द मैच चुना गया। मैच में रैफरी की भूमिका अन्नी माहतौ व इस्तियाक जुग्गी ने निभाई। इस दौरान कमेटी अध्यक्ष बीतू बादशाह, मुशर्रफ कमाल, डॉ आसिफ परवेज, कमरूद्दीन, मंगू भईया, सहित समस्त कमेटी सदस्य उपस्थित रहे।